www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सचित्र बाल कथाएँ

भले बनो

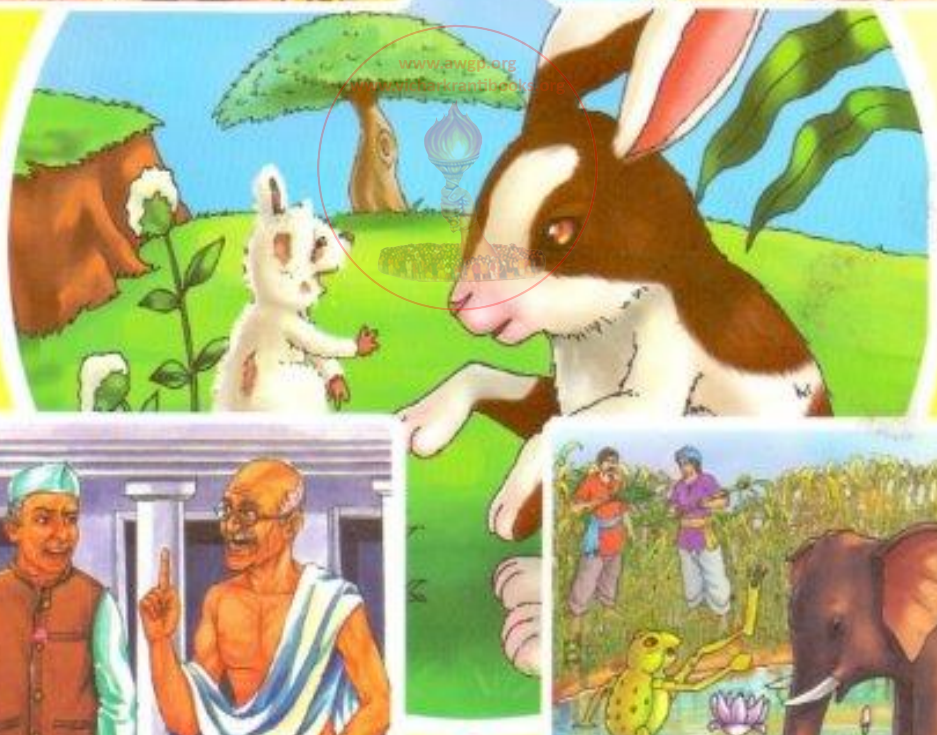

4

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

रँगा सियार

बहुत पुराने जमाने की बात है। गाँव के कुत्तों द्वारा खदेड़ा हुआ एक सियार रँगरेज की नाद में छिप गया। नाद में नीले रँग का पानी भरा था, सो उसमें वह रँग गया।

कुत्ते चले गए तो सियार वापस जंगल में लौटा। उसकी विचित्र काया देखकर सभी जानवर हतप्रभ रह गए। वे उसे कोई विलक्षण प्राणी समझने लगे। इस अवसर का उसने लाभ उठाया। वह कहने लगा—"मुझे देवताओं ने जंगल का राजा बना दिया है। इसीलिए मेरा रूप बदल गया है। सभी मेरा अनुशासन मानें।" बातों ही बातों में सियार जंगल का राजा बन गया। बहुत दिनों तक गाड़ी इसी प्रकार चलती रही। पर एक दिन उधर से गुजर रहे सियारों का झुंड हुँआ-हुँआ चिल्लाया। पुरानी आदत ने जोर मारा और मस्ती में वह भी सुर में सुर मिलाने लगा।

असलियत प्रकट हो गई। सियार की धूर्तता पर क्रुद्ध सभी जानवर उससे लड़ने-मरने को तैयार हो गए। उसे दुम दबाकर भागते बना। वास्तविकता छिपाए नहीं छिपती।

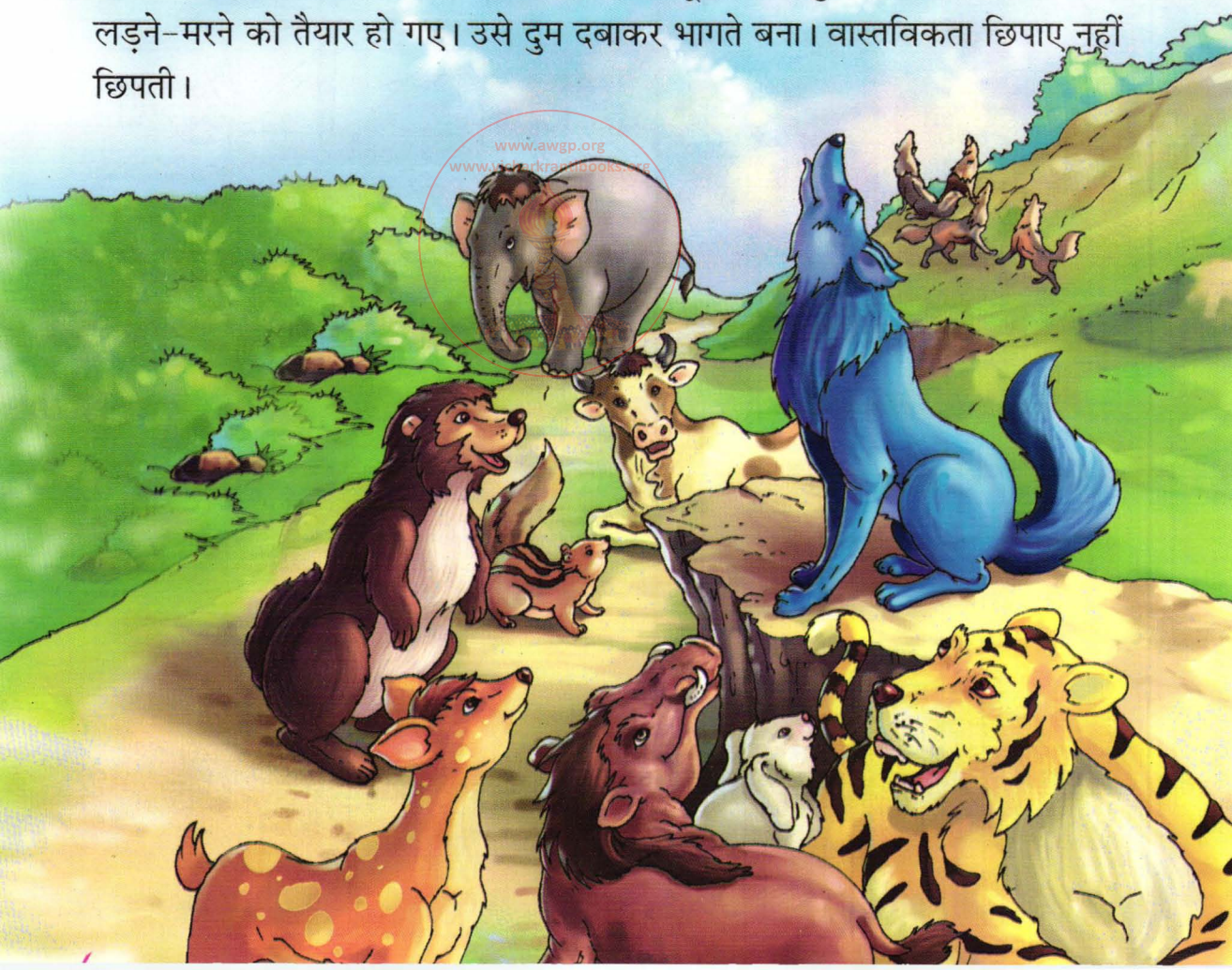

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोभ छोड़ा लाभ नहीं

रेखागणित के अनेक सिद्धांतों के आविष्कारक का नाम था यूक्लिड। यूक्लिड पिता के विरोध करने पर भी अपने काम में लगा रहा। एक दिन उसके पिता ने कहा—"यह बेवकूफी का काम अगर तुम नहीं छोड़ोगे तो मेरी संपत्ति में हिस्सा न पा सकोगे।" यूक्लिड ने कहा—"आप अपना धन भले ही अपने भाइयों को दे दें, मुझे अपने काम में इतना आनंद आता है कि आपकी दौलत उसके सामने तुच्छ है। और यूक्लिड जीवन भर गणित के नए-नए सिद्धांतों के आविष्कार में लगे रहे।"

यूक्लिड पिता के धन का लोभ न छोड़ते तो दुनिया को गणित के उच्च सिद्धांतों के लाभ देने में सफल न होते। छोटे लोभ में बड़े लाभ से वंचित रह जाते।

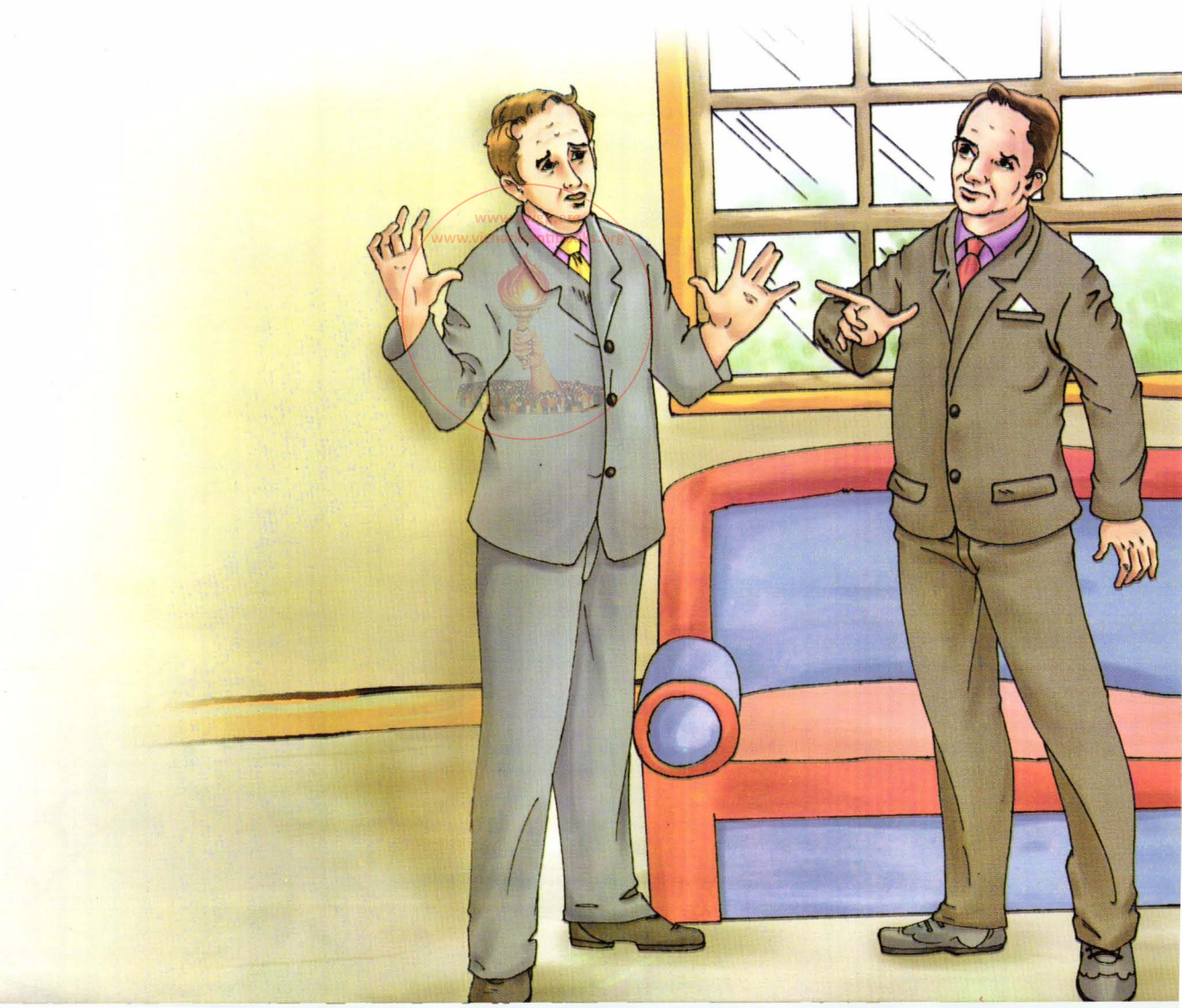

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

फूल और पत्थर

एक पत्थर और एक फूल पास-पास ही रखे हुए थे। एक दिन पत्थर फूल पर बहुत नाराज हुआ। उसने कहा—''जानता नहीं मेरी शक्ति, तुझे जरा सी देर में पीसकर रख दूँगा।''

फूल मुस्कराया और बोला—''तब तो आप मेरी सुगंध को दूर-दूर तक फैला देने का उपकार ही करेंगे, महोदय! इसमें मुझे न दुखी होना है और न परेशान। शरीर का मोह करूँगा तो भयभीत रहूँगा और ऊँचे लक्ष्यों का आनंद न ले सकूँगा।''

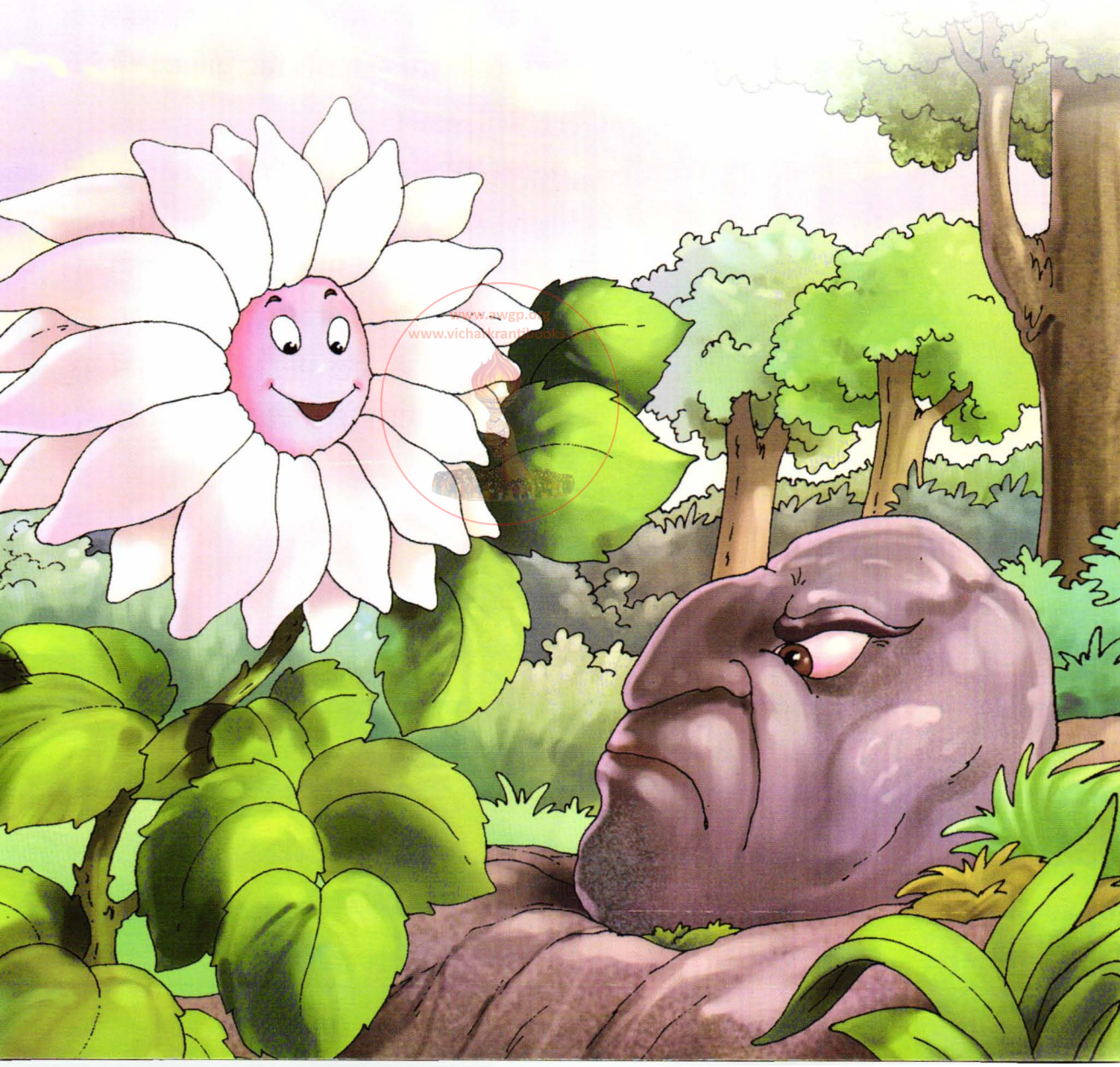

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खरगोश पकड़ूँ या छुड़ाऊँ

एक राहगीर एक जंगल से गुजर रहा था। शाम हो चली थी। पशु-पक्षी अपने घरों को लौट रहे थे। सहसा उसने देखा एक खरगोश का बच्चा किसी अनजान भय से पास के झुरमुट में आ छिपा। खरगोश का बच्चा बड़ा लुभावना था। राहगीर के मन में विचार उठने लगा—"क्यों न इसे मैं घर ले चलूँ।" दूसरे ही क्षण उसने देखा एक अन्य खरगोश का बच्चा रास्ते के दूसरी ओर भागा जा रहा है। अगले ही पल उसे एक गीदड़ ने धर दबोचा।

राहगीर असमंजस में पड़ गया। वह झाड़ी में छिपे खरगोश के बच्चे को पकड़े या दूसरे की गीदड़ से रक्षा करे। एक क्षण में ही यह निर्णय लेना था। एक पल की भी देरी होती, तो दूसरे खरगोश के बच्चे की जान चली जाती।

तभी आत्मा की आवाज उभरी—"कर्त्तव्य धर्म सबसे बड़ा होता है। संकटकालीन घड़ी में किसी की जीवन रक्षा अपनी इच्छा से बड़ी है।" बुद्धि और समझदारी ने भी इसका समर्थन किया। फिर क्या था छिपे बच्चे का मोह त्याग वह गीदड़ के पीछे भागा और खतरे में पड़े खरगोश के बच्चे की प्राण रक्षा की।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्गुरु की प्राप्ति

कबीर को सद्गुरु की तलाश थी। निकट में स्वामी रामानंद के अतिरिक्त और कोई गुरु जैसा दिखाई नहीं देता था। कबीर के अनुरोध को वे स्वीकार कर नहीं पा रहे थे। जुलाहे को दीक्षा देने में उन्हें अन्य शिष्यों के क्रोधित होने का भय था। कबीर ने रास्ता निकाल लिया। वे गंगाघाट में सीढ़ियों पर जा लेटे। वृद्ध स्वामी जी को कम दिखता था। भोर के अँधेरे में नियत रास्ते चलते हुए उनका पैर सीढ़ियों पर लेटे लड़के की छाती पर पड़ा। पता चलते ही वे राम-राम कहते हुए पीछे हट गए।

कबीर उठकर चल दिए। चरण स्पर्श को उनने दीक्षा माना और राम-नाम उच्चारण को गुरुमंत्र। कबीर कहते रहते थे—"शिष्य अपनी शालीनता, अपनी श्रद्धा के बल पर गुरु को और भक्त अपनी भावना के बल पर भगवान को समर्थ बनाता है।"

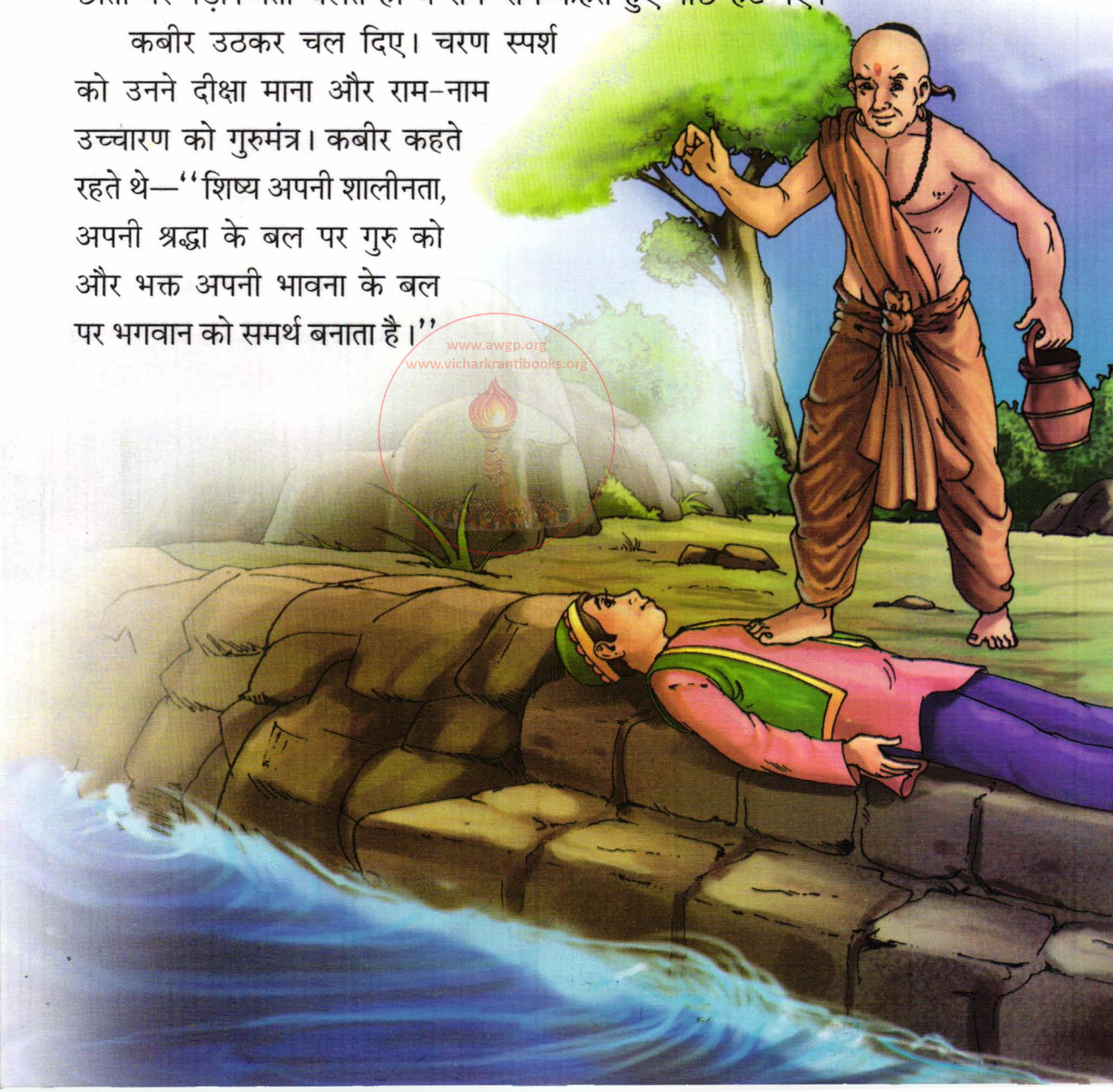

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भले बनो

एक बगीचा था। उसमें तितली और मधुमक्खी दोनों एक ही फूल पर आकर बैठतीं। एक दिन दोनों झगड़ने लगीं कि फूल पर मेरा अधिकार है।

फैसला कराने तोते को बुलाया गया। उसने मधुमक्खी के पक्ष में निर्णय दिया और कहा—"यह दूसरों के लिए शहद निकालती है। इसलिए बैठने का अधिकार तो इसी का रहेगा।" तितली को उदास देखकर तोता कहने लगा—"यदि मधुमक्खी तुम्हें अनुमति दे तो तुम भी फूल पर बैठ सकती हो। परंतु लोग उसी को अधिक प्यार करते हैं जो उनका भला करता है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गुण लौट आए

एक रात एक राजा अपने महल में गहरी नींद में सोया हुआ था। उसने देखा राजमहल से एक देवपुरुष निकलकर जा रहे हैं और उसके पीछे तीन देवियाँ भी चली जा रही हैं।

स्वप्न में राजा ने देवपुरुष से पूछा—"आप कौन हैं और आपके पीछे जाने वाली यह तीन देवियाँ कौन हैं? आप सबके जाने का कारण क्या है?"

देवपुरुष ने कहा—"मेरा नाम है सुसंस्कार। विवेक इसी से जन्म लेता है। जहाँ विलास और अधर्म के पैर जमते हैं वहाँ मैं नहीं रहता और ये तीन देवियाँ भी मेरे साथ ही विदा हो जाती हैं। इनका नाम है—लक्ष्मी, कीर्ति और बुद्धि।"

राजा की आँख खुली। उसने सत्य पर विचार किया और पाया कि उनके क्षेत्र में विलास और अधर्म बढ़ रहा है। सुसंस्कारजन्य सभी प्रकार की आदतें घट रही हैं, अनाचार बढ़ रहा है। ऐसी दशा में इन विभूतियों का विदा होना स्वाभाविक ही है।

राजा ने अपनी कार्यपद्धति में दूसरे दिन से परिवर्तन कर दिया।

दूसरे दिन स्वप्न आया कि वे चारों ही लौट आए हैं। जहाँ विवेक रहता है, चिंतन में श्रेष्ठता रहती है, वहाँ सभी विभूतियाँ बनी रहती हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मंत्री का चुनाव

एक बार एक राजा को अपने मंत्री का चुनाव करना था। सभी दरबारी इकट्ठे किए गए। राजा ने दरबार में एक बोतल बंद करके पानी छिड़क दिया और सभी से पूछा—"यह इत्र कन्नौज से आया है। इसकी सुगंध कैसी है, अपनी-अपनी सम्मति बताओ तो?"

राजा को खुश करने के लिए सभी दरबारी सुगंध की भरपूर प्रशंसा करने लगे। अंत में दबी जबान से एक जमींदार ने कहा—"सुगंध तो जरा भी नहीं आती। कारण मेरी नाक खराब होना भी हो सकता है।"

स्पष्ट बोलने वाले व्यक्ति को राजा ने अपना मंत्री बनाया।

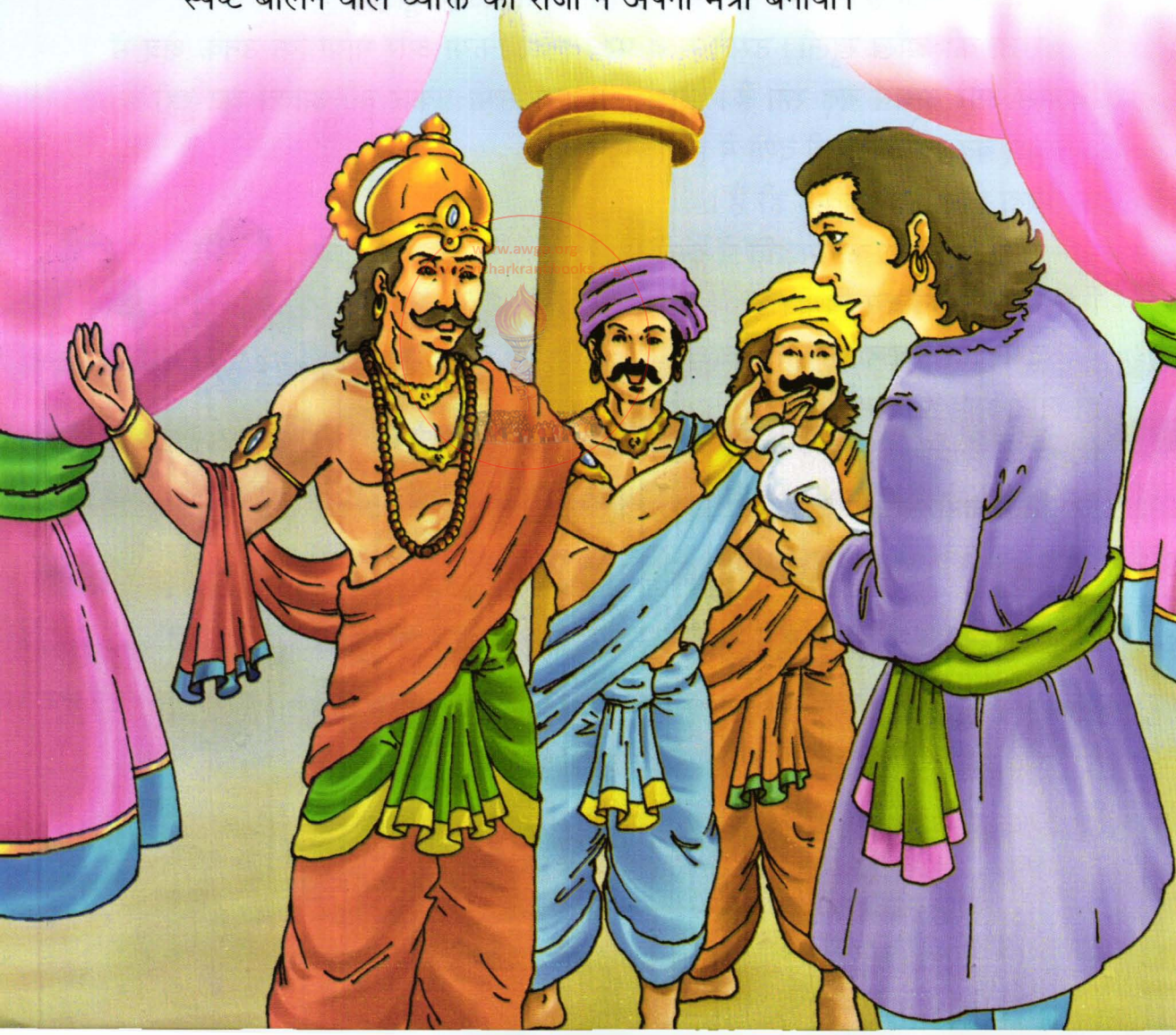

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हैसियत न भूलो

एक नदी के किनारे ऊँट और गधा नदी पार करने के लिए खड़े थे। ऊँट नदी में अंदर गया और उस पार हो गया। इस पार खड़े गधे ने पूछा—"पानी कितना है?" ऊँट ने कहा—"पेट तक है बेखटके चले आओ।"

गधे ने कहा—"पर मेरी तो पीठ पर से पानी ऊपर हो जाएगा और मैं डूबे बिना न रहूँगा। आपकी नकल मैं कैसे करूँ? मुझे तो अपनी हैसियत देखकर चलना है।" गधा बेवकूफी का पर्यायवाची रूप भले ही माना जाता हो पर इतनी समझ उसमें भी है कि वह अनुकरण सोच-समझकर करता है। विचारशील लोग जहाँ पर हैं वहीं से आगे बढ़ने की बात सोचते हैं, दूसरों की नकल नहीं करते।

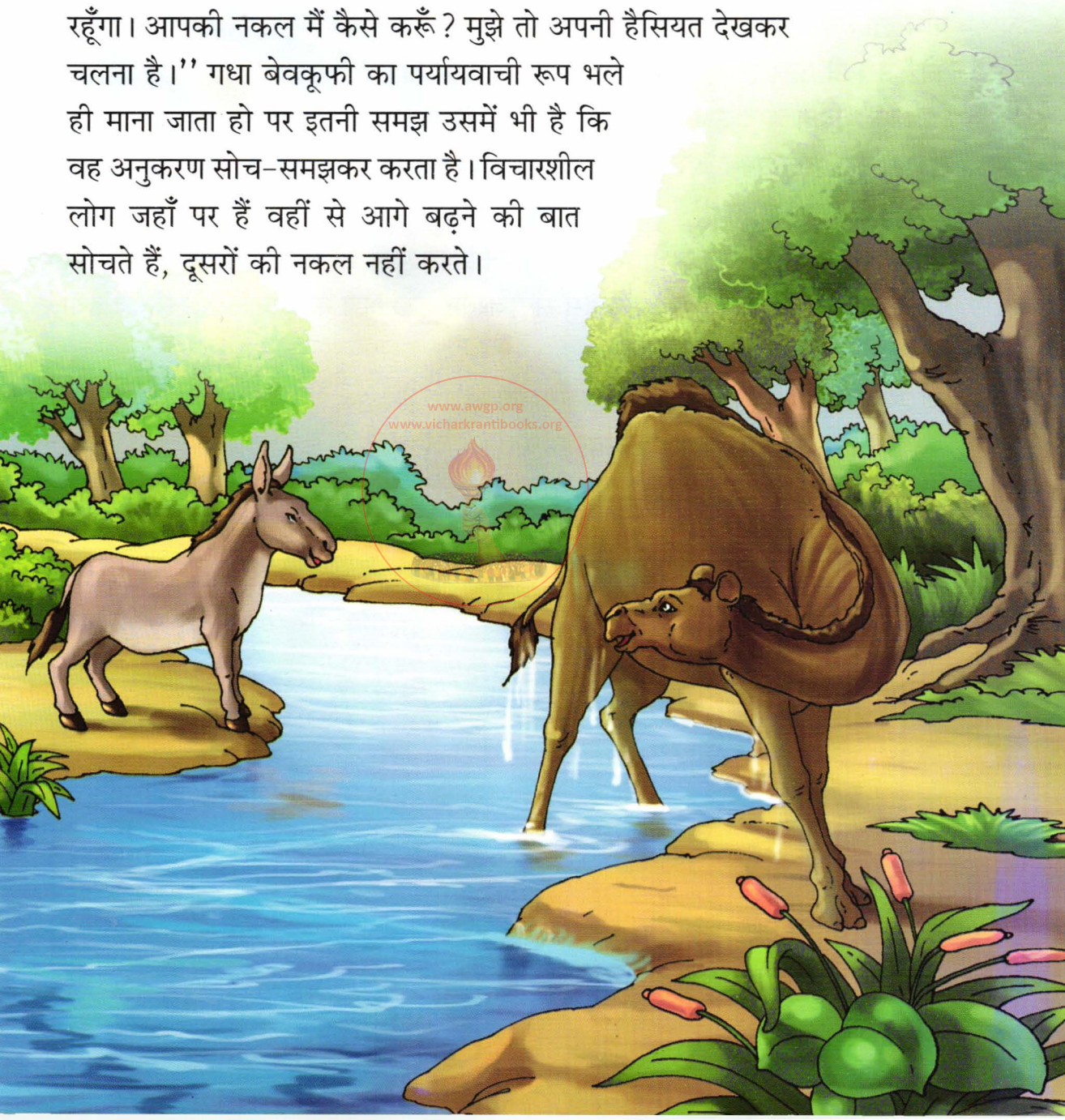

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्संग से मिली शिक्षा

एक दिन गुलाब का पौधा राजनीतिज्ञ के पास कुछ सीखने के उद्देश्य से पहुँचा। राजनीतिज्ञ ने सिखाया—''जो जैसा व्यवहार करता है, उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। दुष्ट के साथ दुष्टता करना ही नीति है, यदि ऐसा न किया गया तो संसार तुम्हारे अस्तित्व को मिटाने में लग जाएगा।'' गुलाब ने उस राजनीतिवेत्ता की बात गाँठ बाँध ली। घर लौटकर आया तो अपनी सुरक्षा के लिए काँटे उत्पन्न करने लगा। जो कोई उसकी ओर हाथ बढ़ाता वह काँटे छेद देता था।

कुछ दिनों बाद उस पौधे को एक साधु से सत्संग करने का अवसर मिल गया। साधु ने उसे बताया—''परोपकार में अपने जीवन को खपाने वाले से बढ़कर सम्माननीय कोई दूसरा नहीं होता।''

परिणामस्वरूप गुलाब ने उसी दिन अपने प्रथम पुष्प को जन्म दिया। उसकी सुंगध दूर-दूर तक फैलने लगी। जो भी पास से गुजरता, कुछ क्षण के लिए उसके सौंदर्य तथा सुरभि से मुग्ध हुए बिना न रहता।

व्यक्ति को जैसी संगति-साथ मिलता है, वह वैसा ही बन जाता है। अतः अच्छे लोगों का संग ही करना चाहिए।

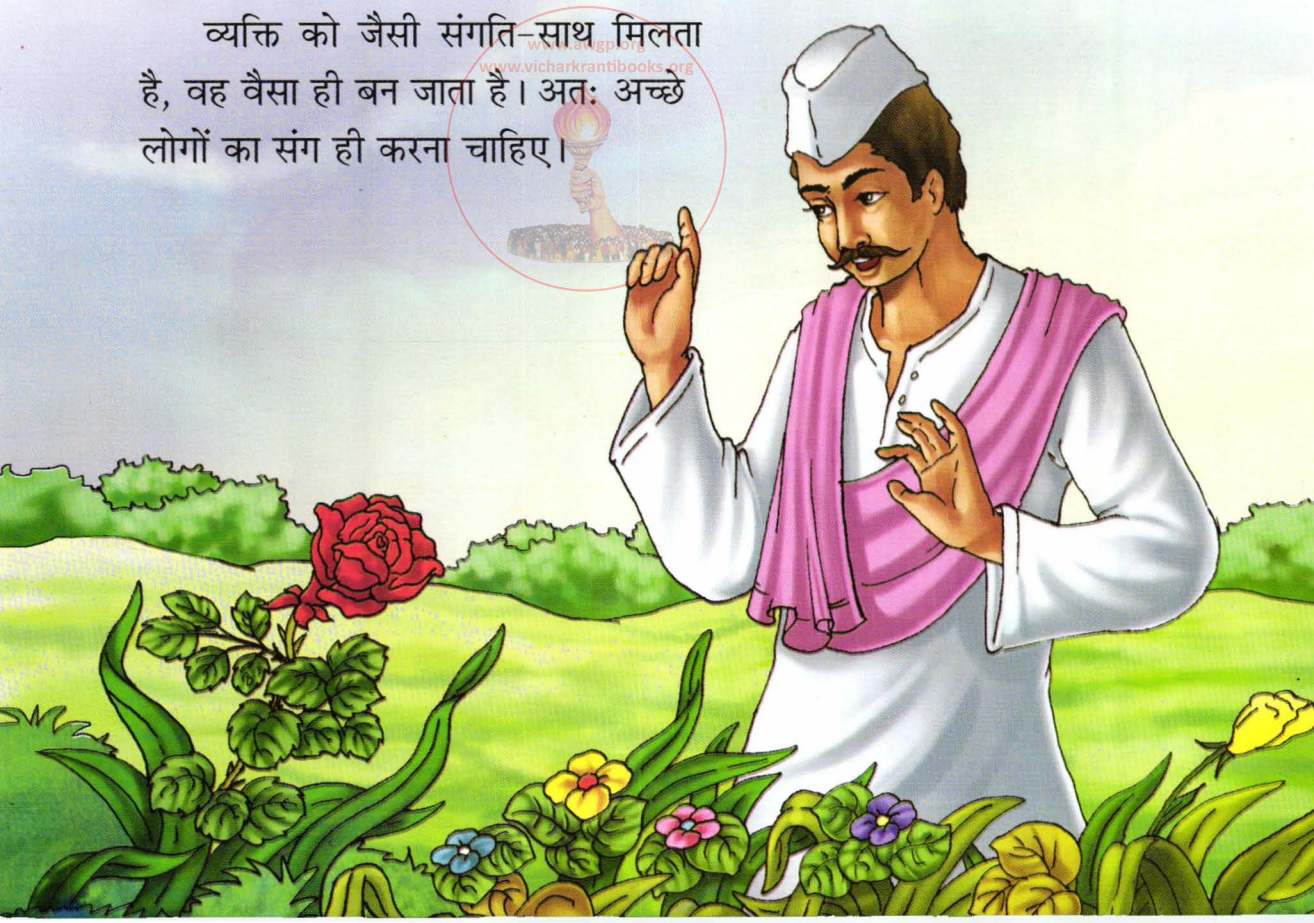

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गांधी जी की शिक्षा

एक बार गांधी जी इलाहाबाद में आनंदभवन में ठहरे। सुबह गांधी जी हाथ-मुँह धो रहे थे और जवाहर लाल जी पास खड़े बातें कर रहे थे। कुल्ला करने के लिए गांधी जी ने जितना पानी लिया, वह समाप्त हो गया तो उन्हें दूसरी बार फिर पानी लेना पड़ा। गांधी जी बड़े खिन्न हुए और बातचीत का सिलसिला टूट गया। जवाहर लाल जी ने कारण पूछा तो उन्होंने कहा—"मैंने पहला पानी ज्यादा खरच कर दिया और अब फिर पानी लेना पड़ रहा है। यह मेरी बड़ी भूल और लापरवाही है।"

जवाहर लाल जी हँसते हुए बोले—"यहाँ तो गंगा-यमुना दोनों बहती हैं। रेगिस्तान की तरह पानी कम थोड़े ही है। आप थोड़ा पानी अधिक खरच कर लें तो चिंता की क्या बात है?"

गांधी जी ने कहा—"गंगा-यमुना मेरे लिए ही तो नहीं बहतीं। प्रकृति में कोई भी चीज कितनी ही हो, मनुष्य को उसमें से उतना ही खरच करना चाहिए जितना उसके लिए आवश्यक हो।"

महात्मा गांधी जी का यह चिंतन आज भी हमें बहुत बड़ी शिक्षा देता है। प्रकृति की वस्तुओं को बेकार में बरबाद करके हम अपना ही बुरा कर रहे हैं।

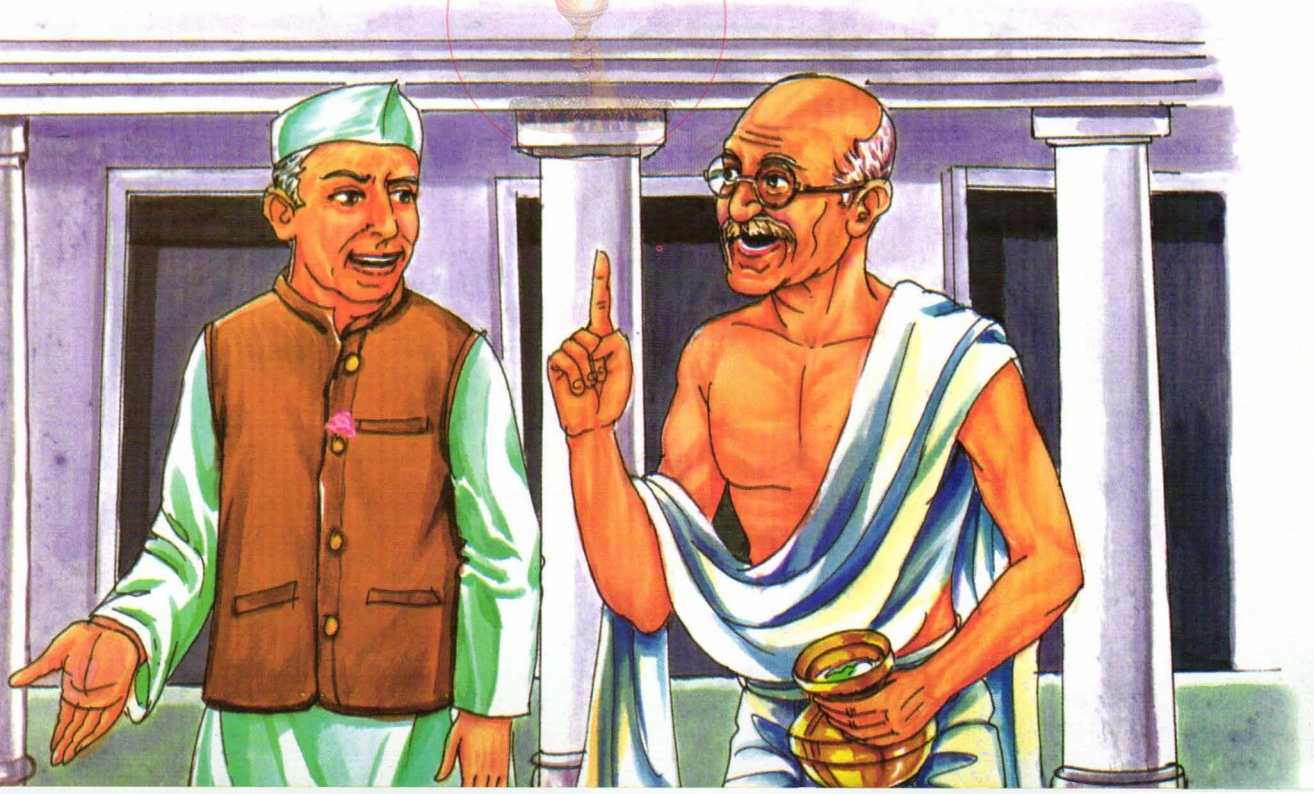

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'ला' और 'ले' का झंझट

एक सेठ कुएँ में गिर पड़े। कुआँ गहरा नहीं था। सो वे निकलने के लिए चिल्लाने लगे। एक किसान ने सुना तो पहुँचा और बोला—"ला, अपना हाथ, उसमें अपनी रस्सी बाँधकर ऊपर खींच लेंगे।"

सेठ जी हाथ ऊपर करने और किसी के फंदे में फँसने को तैयार नहीं हो रहे थे।

झंझट का कारण देखकर एक समझदार आदमी वहाँ पहुँचा और बोला—"सेठ जी रस्सी ले लीजिए और पकड़कर ऊपर चढ़ आइए।"

बात उन्होंने मान ली और बाहर निकलने का उपाय बन गया।

पहली बार किसान कह रहा था 'ला हाथ'। दूसरे समझदार ने कहा था—'ले रस्सी'। 'ला' और 'ले' का झंझट था जिसके कारण कुएँ से निकलने में इतनी देर लगी। इस प्रकार की दुविधा में व्यक्ति अपना हित भी नहीं समझ पाता। यह कशमकश कितनों को ही नष्ट कर डालती है।

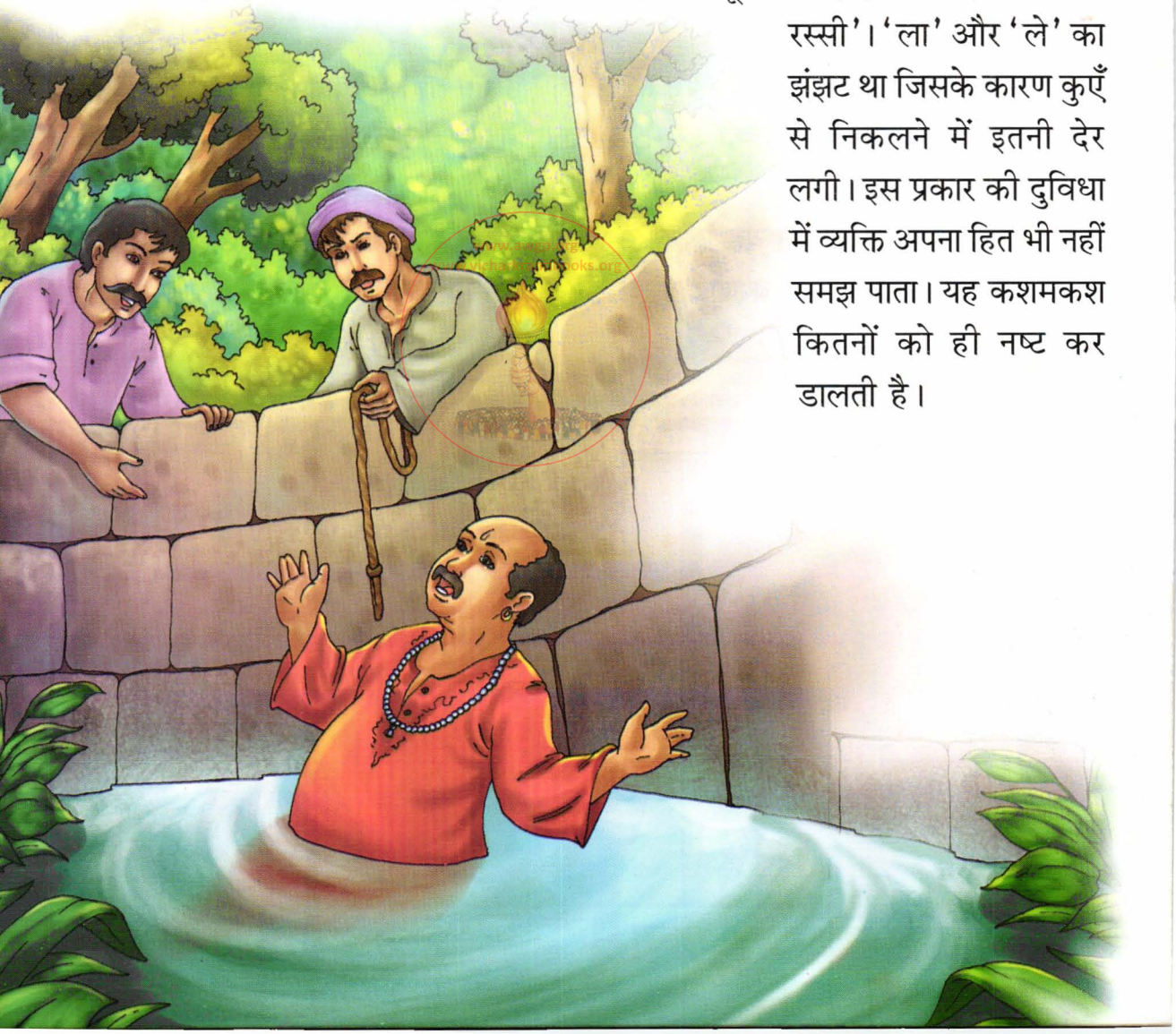

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊँट और आदमी

ऊँटों का एक बड़ा काफिला सौदागरी माल लादकर सफर पर निकला। मालिकों ने रात बिताने के लिए एक सराय खोजी। मालिकों को चारपाइयाँ मिल गईं। पर ऊँटों को तो जमीन पर ही सुस्ताना था।

आदत के मुताबिक ऊँटों की रस्सी बाँधने के लिए खूँटियाँ गाड़ी गईं। जो बँध गए वह चैन से सुस्ताने लगे। एक खूँटी कम पड़ रही थी। ऊँट कैसे बाँधा जाए? इसके बिना वह बैठने तक को तैयार नहीं हो रहा था। सराय मालिक समझदार था। उसने सलाह दी—झूठ-मूठ जमीन में खूँटी गाड़ो और झूठ-मूठ ही उससे रस्सी बाँध दो। ऐसा ही किया गया। तरकीब काम दे गई। ऊँट बैठ गया और सुस्ताने लगा। अब सवेरा होते-होते वही समस्या आई। खूँटी उखाड़ने पर और सब ऊँट तो उठ बैठे पर वह उठने को राजी न होता था। सराय मालिक ने सलाह दी कि झूठ-मूठ खूँटी उखाड़ो और रस्सी हिलाकर उठाओ। ऊँट उठ बैठा और काफिले के साथ चलने लगा। काफिले में एक बुजुर्ग थे। उनने ज्ञान चर्चा करते हुए साथियों से कहा—"आदमियों की आदत भी इस ऊँट जैसी ही है। वे भी ढर्रे के आदी हैं। उन्हें झूठ भी सच और अच्छा लगता है। सच को जानने और समझने की कोशिश ही नहीं करते। इसी कारण जो कुछ भी सरल, सुगम व अभ्यास में आ गया है, वह स्वभाव से छूटता नहीं।"

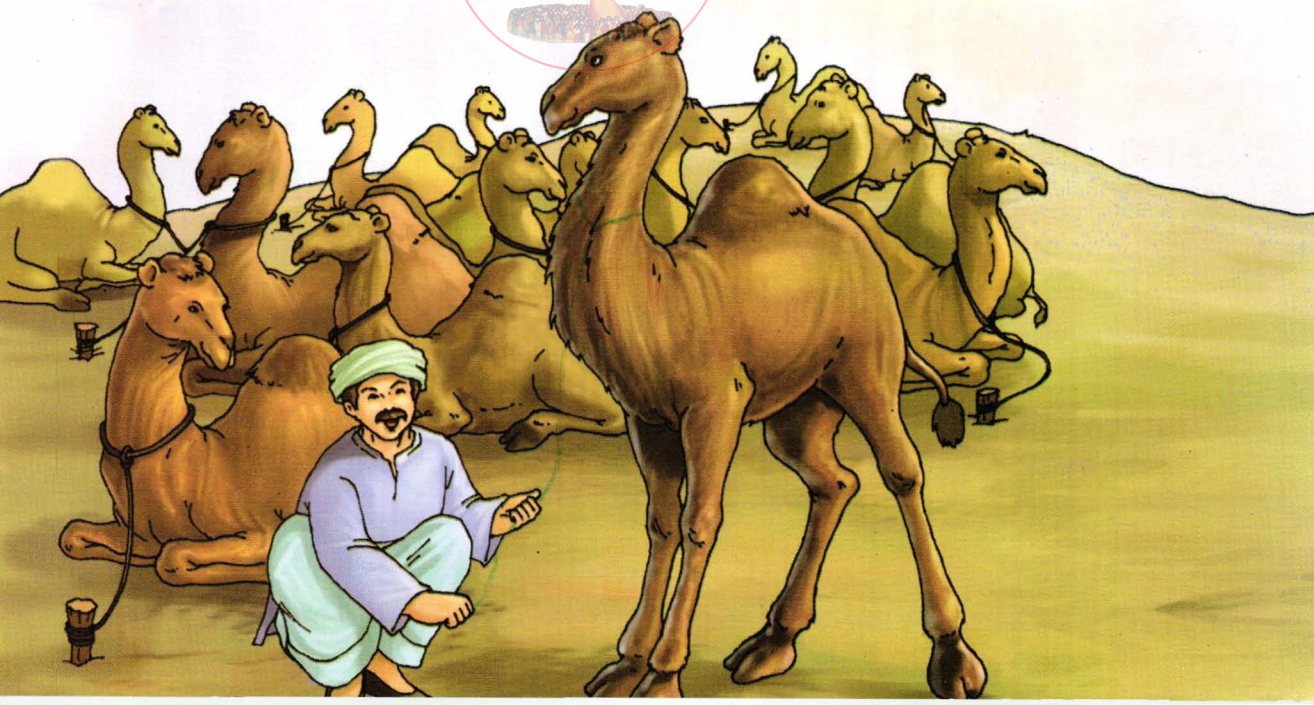

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साहसी बिस्मिल

क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल को जिस दिन फाँसी लगनी थी, उस दिन सवेरे जल्दी उठकर वे व्यायाम कर रहे थे। जेल अधिकारी ने पूछा—"आज तो आपको एक घंटे बाद फाँसी लगने वाली है, फिर व्यायाम करने से क्या लाभ?" उनने उत्तर दिया—"जीवन आदर्शों और नियमों में बँधा हुआ है। जब तक शरीर में साँस चलती है, तब तक व्यवस्था में अंतर आने देना उचित नहीं।"

थोड़ी सी अड़चन सामने आ जाने पर जो लोग अपनी दिनचर्या और कार्यव्यवस्था को अस्त-व्यस्त कर देते हैं, उनको बिस्मिल जी मरते दम तक अपने आचरण द्वारा यह बता गए हैं कि समय का पालन, नियमितता एवं धैर्य ऐसे गुण हैं, जिनका पालन जीवन में अंत समय तक करना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सिद्धांतों को महत्त्व दें

ईसा ने जिस समय खुलकर अपने विचारों एवं सिद्धांतों का प्रचार करना शुरू किया तो उनके बहुत से शत्रु हो गए। उनके एक शिष्य ने उनकी रक्षा के लिए साथ रहने का अनुरोध करते हुए कहा—"प्रभु! आप संसार का कल्याण कर रहे हैं और ये देशवासी आपको कष्ट देना ही अपना कर्त्तव्य समझ रहे हैं। आपको मार डालना चाहते हैं। मैं आपकी रक्षा के लिए आपके साथ रहूँगा।"

महात्मा ईसा अपने शरीर की रक्षा के लिए किसी को कष्ट नहीं देना चाहते थे। उन्होंने शिष्य का दिल न तोड़ते हुए मना किया—"वत्स! देख जंगली जानवरों तथा पक्षियों तक की रहने की जगह और बसेरे हुआ करते हैं। किंतु मुझ मनुष्य के पुत्र को मनुष्यों के संसार में कहीं सिर छिपाने तक को जगह नहीं है। तू मेरे साथ कहाँ-कहाँ भटकता रहेगा? मेरी शरीर रक्षा के स्थान पर तू मेरे सिद्धांत एवं विचारों को अधिक महत्त्व दे।"

जो मैं कहता हूँ उसे कर और दूसरों को वैसी शिक्षा दे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उल्लू और चमगादड़

किसी बस्ती में एक उल्लू रहता था। उसकी बोली लोग बड़ी अशुभ समझते थे। इसलिए कोई भी उसे अपने पास न आने देता। जैसे ही वह बोलता, लोग उसे भगा देते।

बस्ती वालों के इस व्यवहार से उल्लू बड़ा दुखी रहने लगा। एक दिन वह अपनी सहेली चमगादड़ से बोला—"बहन, मेरी आवाज कोई सुनना नहीं चाहता। लोगों के इस व्यवहार से मुझे बड़ा दुःख होता है। मैं यह स्थान छोड़कर जा रहा हूँ।"

चमगादड़ उसे समझाते हुए कहने लगी—"मित्र, परिस्थितियाँ तो सब जगह एकसी ही हैं। अपनी आवाज के कारण तो तुम जहाँ भी जाओगे, तिरस्कार पाओगे। अच्छा तो यही है कि तुम लोगों की निंदा से प्रभावित न होओ। तुम अपने चिंतन को संतुलित रखो। सद्‌गुणों को अपनाओ। यही सुखी और सफल जीवन का रहस्य है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सियारों ने ऊँट खाया

एक आलसी ऊँट ने बहुत लंबे समय तक तप किया। देवताओं ने प्रसन्न होकर वरदान माँगने के लिए कहा। आलसी ऊँट ने माँगा कि एक जगह बैठे-बैठे ही दूर-दूर की घास चर लिया करे। अपनी गरदन को एक मील लंबा करा लिया। सो वह बहुत प्रसन्न था।

बरसात आई। उसने सिर छिपाने की कई जगह तलाश की। एक गुफा दिखाई दी। उसमें वह ऊँट अपना सिर ही रख सका। इतने में दो सियारों का जोड़ा उसमें घुस पड़ा। उन्होंने ऊँट की गरदन काट डाली और महीनों उसका मृत मांस खाते रहे। जो वरदान मिला था वह भी बेकार चला गया। आलसी सदा दुःख ही पाता है। जीवन तो लगातार परिश्रम करने से ही सुखी और सफल बनता है।

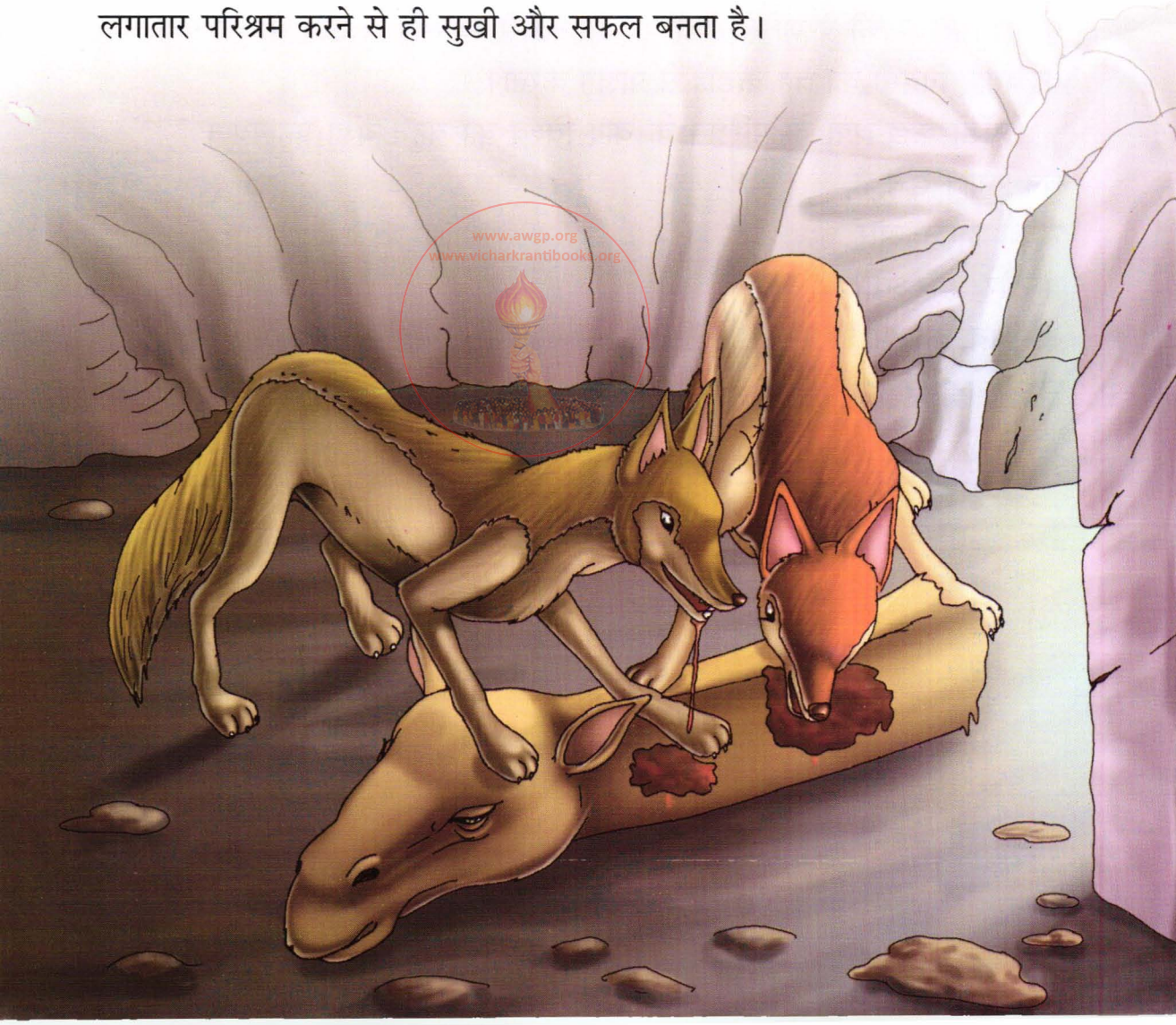

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सच्ची लगन

यूनेस सेंडो बचपन से ही बहुत दुबला था। वह प्रायः बीमार ही रहता था। वह एक दिन पिता के साथ पहलवानी का दंगल देखने गया। वहाँ पर मनुष्यों के गठे हुए बलवान शरीरों को देखकर वह बहुत ही प्रभावित हुआ। सेंडो ने पिता से पूछा—"पिताजी, क्या कोई उपाय है, जिससे मेरा शरीर भी इनके जैसा बन जाए?"

पिता ने प्यार से सेंडो को समझाया—"तुम मन में जैसा संकल्प करोगे, वैसे ही बन जाओगे। कोई भी व्यक्ति संयम और प्रयास से अपनी उन्नति कर सकता है।"

पिता ने विस्तार से सेंडो को बताया कि यदि वह स्वास्थ्य सुधारना चाहता है तो उसे स्वयं ही प्रयास करना होगा। कड़ाई से स्वास्थ्य के नियमों का पालन करना होगा। पिताजी की प्रेरणा से सेंडो पूरी मेहनत से स्वास्थ्य सुधारने में जुट गया। पिता के बताए नियमों का वह कड़ाई से पालन करता।

सेंडो कुछ वर्षों के परिश्रम के बाद विश्व का बहुत बड़ा पहलवान बन गया। सच है, सच्ची लगन और कठोर परिश्रम असंभव को भी संभव बना देते हैं।

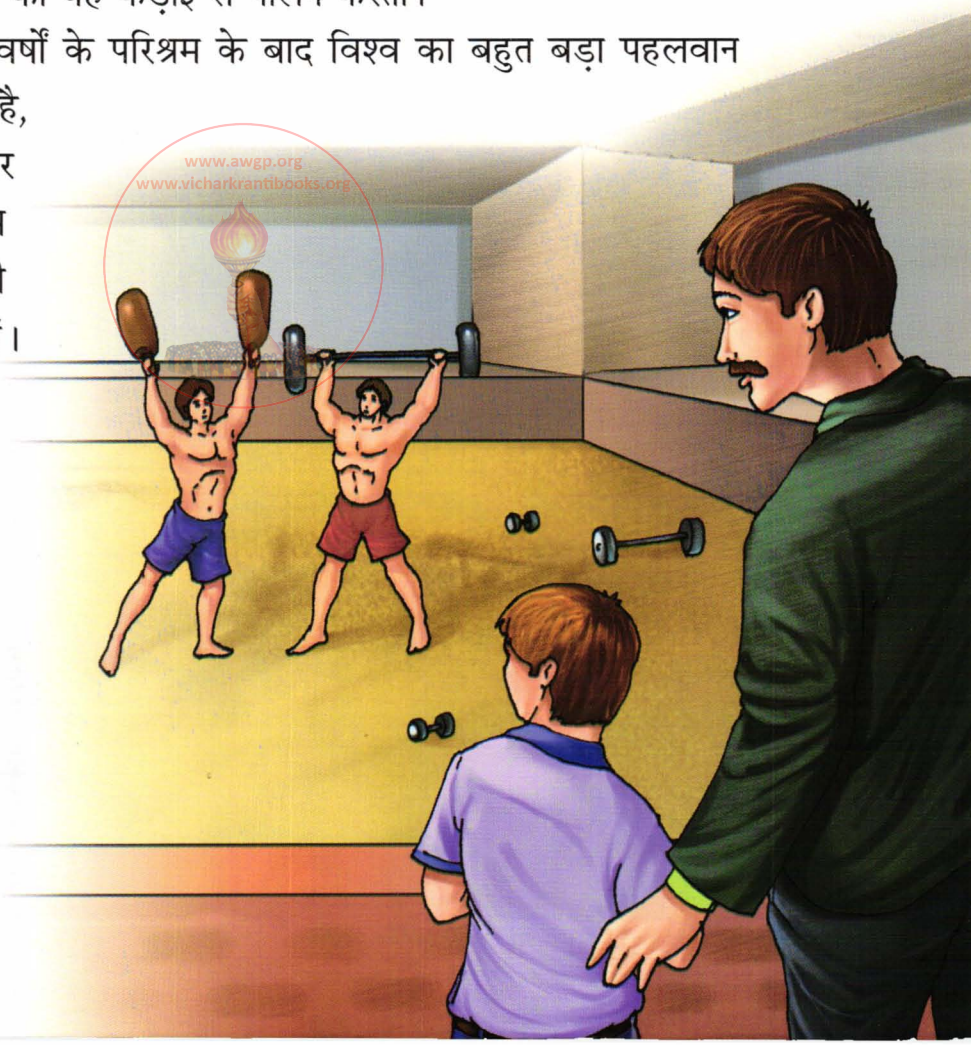

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ठग और हलवाई

एक ठग था। उसने हलवाई को लूटने की योजना बनाई। वह हलवाई की दुकान के सामने छप्पर के नीचे बैठा रहा और बिक्री के पैसे गिनता रहा। जब दुकान बंद करके हलवाई चलने लगा तो उसने पैसों की पोटली छीन ली तथा भाग गया। छीन-झपट में हो हल्ला मचा तो ठग कहने लगा कि पैसा मेरा है। या तो हलवाई गिनती बता दे या मैं बताए देता हूँ। पंचों ने दोनों के अलग-अलग बयान लिए। ठग ने पूरी गिनती बता दी पर हलवाई न बता सका, उसे गिनने की फुरसत ही कहाँ मिलती थी।

अंतिम फैसले के लिए झगड़ा राजा के पास पहुँचा। उसने पैसों को पानी भरी बाल्टी में डलवाया। उनमें लगा घी ऊपर तैरने लगा। फैसला हुआ पैसा हलवाई का है क्योंकि चिकनाई से उसी के हाथ सने हो सकते हैं। न्यायकर्त्ता की सूझ-बूझ पर सभी लोग दंग रह गए। साथ ही यह भी बोले कि झूठे और लोभी का भेद अंततः खुलता ही है। अंत में सत्यनिष्ठा ही जीतती है।

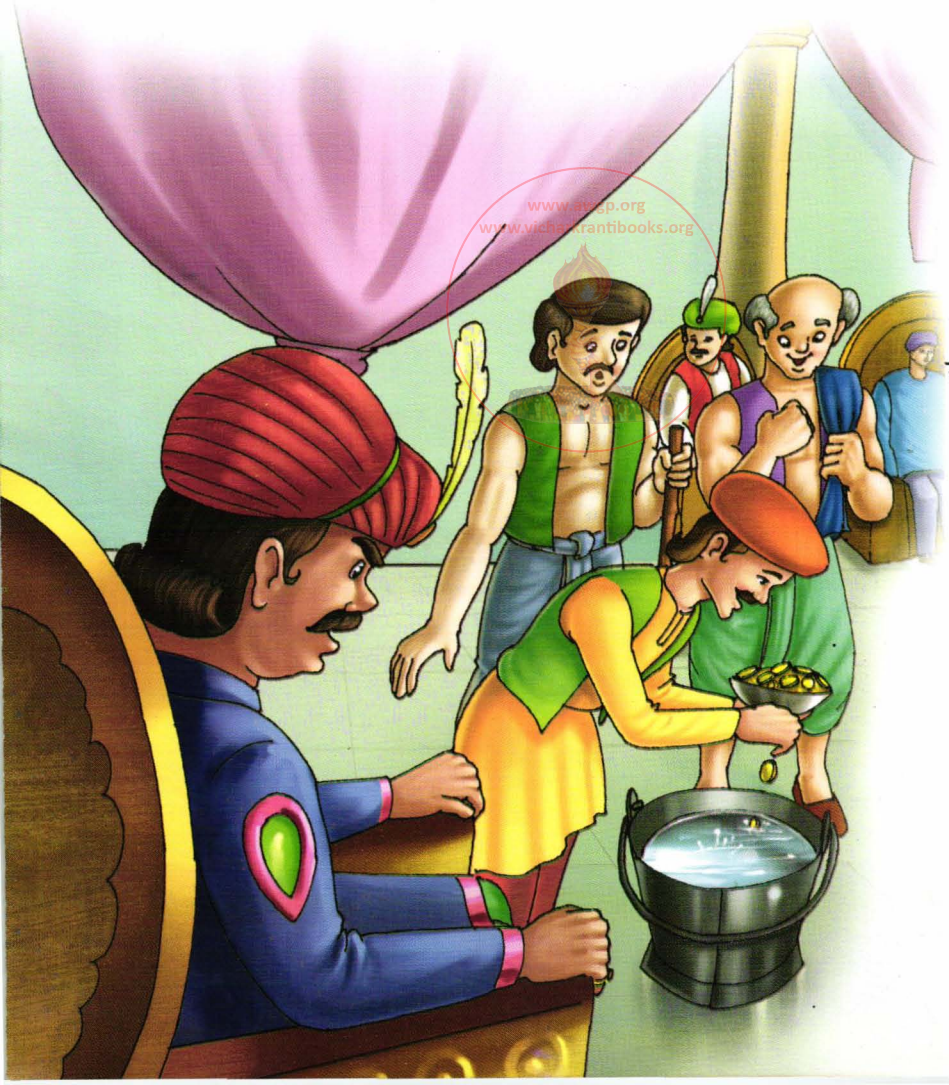

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सच तो सच है

एक नादान चूहा था। उसकी किसी मसखरे खरगोश से दोस्ती हो गई।

एक दिन चूहा खरगोश से बोला—"दोस्त, तुम तो बड़े ही सुंदर हो। मेरा शरीर भी अपने जैसा बना दो।" खरगोश ने बहुत समझाया कि शरीर तो ईश्वर का बनाया हुआ है। प्राणी तो अपने गुण ही बढ़ा सकता है, सो तुम सद्‌गुणी बनो।

पर चूहा था कि सुनता ही न था। वह तो लगातार हठ किए जा रहा था। तब खरगोश को मजाक सूझा। वह चूहे से बोला—"तुम पहले गुड़ की चाशनी में नहाओ। फिर रूई के ढेर में घुस जाओ।" चूहे ने ऐसा ही किया। उसका शरीर खरगोश सा दिखने लगा। वह बड़ा ही खुश हुआ। सब उसके रूप की खूब प्रशंसा कर रहे थे।

अगले ही दिन जोरों की वर्षा हुई। रूई छूट गई। चूहा और भी कुरूप दिखने लगा। सभी उसकी खूब हंसी उड़ाने लगे।

झूठ कब तक चल सकता है ? सच तो सच ही है। इसलिए दूसरों के रूप की होड़ न करो। उनके गुणों को अपनाओ। सद्‌गुणों से ही ऊँचा उठा जा सकता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दुष्ट का स्वभाव

एक भेड़िया था। एक दिन वह एक हड्डी चबा रहा था। उसके गले में हड्डी अटक गई। भेड़िया घबराकर सारस के पास पहुँचा और गिड़गिड़ाने लगा—"भइया, तुम्हें भगवान ने लंबी थूथनी दी है। मुझ पर दया करो। मैं मर रहा हूँ। मेरे गले की हड्डी तुम ही निकाल सकते हो।"

सारस को उसकी यह हालत देखकर बड़ी ही दया आई। उसने अपनी जान की भी परवाह न की। अपनी थूथनी भेड़िये के गले में डालकर हड्डी निकाल दी। भेड़िया उसे धन्यवाद देकर चला गया। एक बार सारस पर मुसीबत पड़ी। तब उसे भेड़िये की याद आई। वह मन में बड़ी ही आशा लेकर भेड़िये के पास पहुँचा, पर भेड़िया उसकी सहायता करने के लिए तैयार ही न हुआ। सारस ने अपना पहले किया हुआ एहसान याद दिलाया। भेड़िया अकड़कर बोला—"जा-जा चुपचाप से भाग जा। इसी में तेरी भलाई है। क्या मेरा यह एहसान कम है कि अपने मुँह के अंदर गई तेरी गरदन मैंने चबाई नहीं।" सारस अपना सा मुँह लेकर लौट गया। वह मन ही मन सोच रहा था कि दुष्ट को बदलना बड़ा कठिन है। उससे सहायता की आशा नहीं करनी चाहिए।

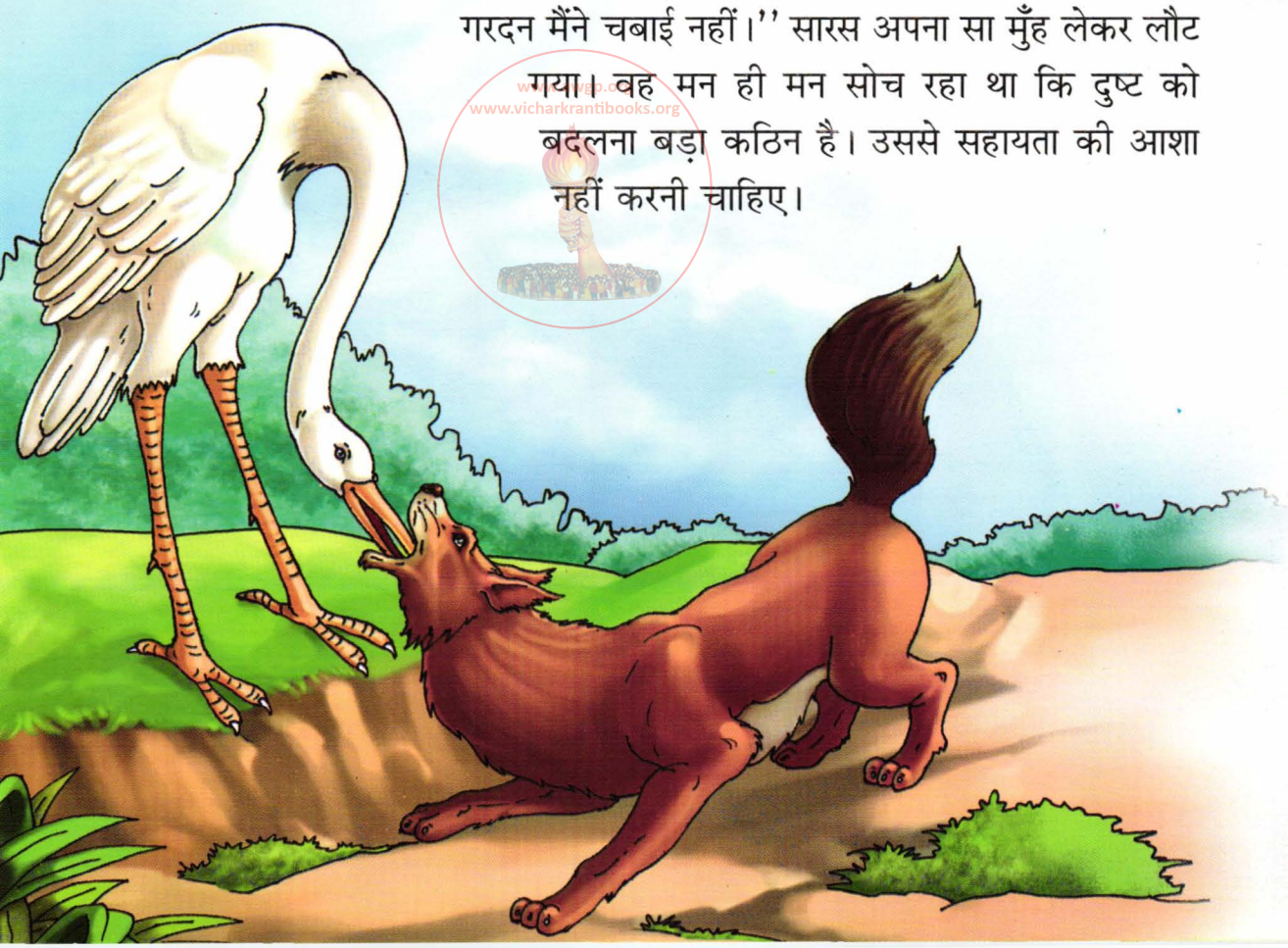

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाई भार नहीं होता

एक महात्मा पहाड़ी पर चढ़ रहे थे। उसी समय एक दस वर्षीय लड़की अपने दो वर्ष के भाई को गोदी में लिए पहाड़ी की चढ़ाई चढ़ रही थी। महात्मा ने कहा—"बच्ची, तू इतना भारी बोझ गोद में लिए कैसे चढ़ पाएगी?" लड़की ने तुरंत उत्तर दिया—"बाबा! यह बोझ नहीं, भाई है।"

जहाँ प्रेम व भावना होती है, वहाँ कोई काम भारी नहीं होता। भावना न हो, तो जीवन भी भारी लगने लगता है। सच्ची पारिवारिकता वहीं है, जहाँ मन से प्यार और निष्ठा के भाव निकलते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सफलता का शिखर

एक गरीब लड़का था। वह बिना किसी से सहायता माँगे फीस अपने पास से जमा करता था। लड़का किताबें भी स्वयं ही खरीदता था। जो उससे जलते थे, उन्होंने उस पर लांछन लगाया कि यह पैसा कहीं से चुराता है। प्रधानाध्यापक ने जाँच की तो मालूम हुआ कि वह स्कूल से बचे समय में एक माली के यहाँ सिंचाई का काम करता है। उससे कुछ पैसा कमाता है।

प्रधानाचार्य ने उसे अपने पास बुलाया। उन्होंने प्यार से पूछा—"बेटे! तुम अपनी फीस माफ क्यों नहीं करा लेते?" उस निर्धन बालक ने स्वाभिमान से उत्तर दिया—"जब मैं मेहनत करके अपना काम चला सकता हूँ तो मैं अपनी गिनती असमर्थों में क्यों कराऊँ?" छात्र की इस बात से प्रधानाचार्य का सिर भी गर्व से ऊँचा हो गया।

मेहनत करके कमाने में विश्वास रखने वाला बालक था— सदानंद चट्टोपाध्याय। बड़ा होने पर, २० वर्ष बाद, इन्हें बंगाल के शिक्षा संगठन का डायरेक्टर बनाया गया। मेहनती और सच्चे ईमानदार व्यक्ति सदा सफलता के ऊँचे शिखर पर चढ़ते जाते हैं।

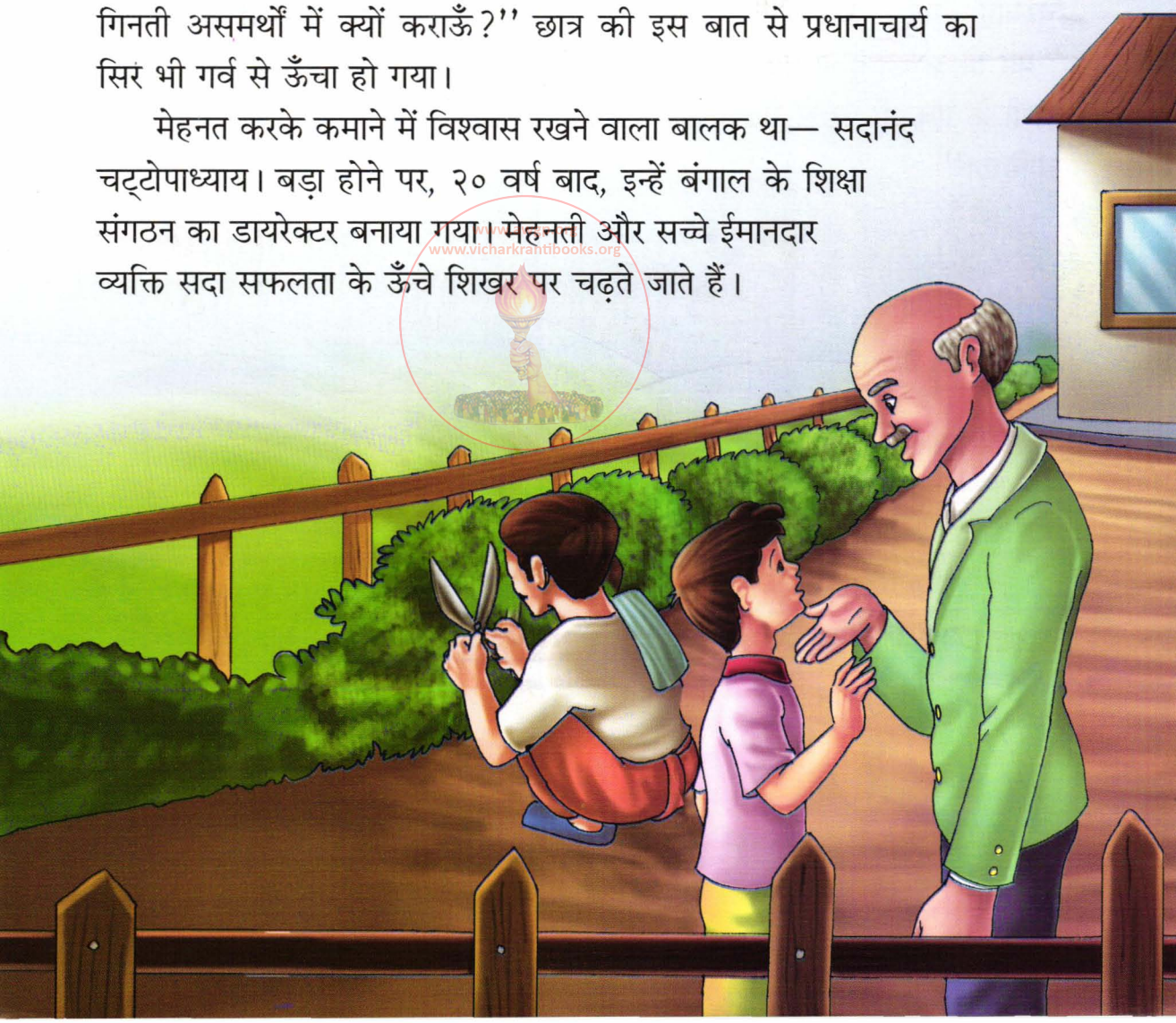

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेढक का अंहकार

एक तालाब में, एक बड़े आकार का पीला मेढक रहता था। वह अपने को उस तालाब का स्वामी बताता था। वह छोटे जीव-जंतुओं को धमकाता रहता था। एक दिन हाथी उधर से निकला और रास्ते में तालाब देखकर उसमें पानी पीने घुस गया। इस पर पीले मेढक को ताव आया। उसने लात उठाकर हाथी को धमकाया और कहा— ''मूर्ख, जानता नहीं यहाँ मेरा साम्राज्य है। तेरी इतनी हिम्मत कैसे पड़ी जो बिना पूछे मेरे क्षेत्र में घुस आया। जानता नहीं, लात के मारे तेरा कचूमर निकाल दूँगा।''

हाथी ने ध्यान न दिया। वह पानी पीकर देर तक तालाब में नहाता रहा। हाथी ने थोड़ी देर बाद बाहर निकलकर अपना रास्ता पकड़ा। तालाब के किनारे खेती कर रहे चरवाहे—मेढक और हाथी की बात सुन रहे थे। वे हँसे और आपस में कहने लगे— ''यह तो अच्छा हुआ मेढक की गर्वभरी बातों से हाथी को गुस्सा नहीं आया। नहीं तो हाथी के एक ही पैर से मेढक का काम तमाम हो जाता। अहंकार से सबको दूर रहना चाहिए।''

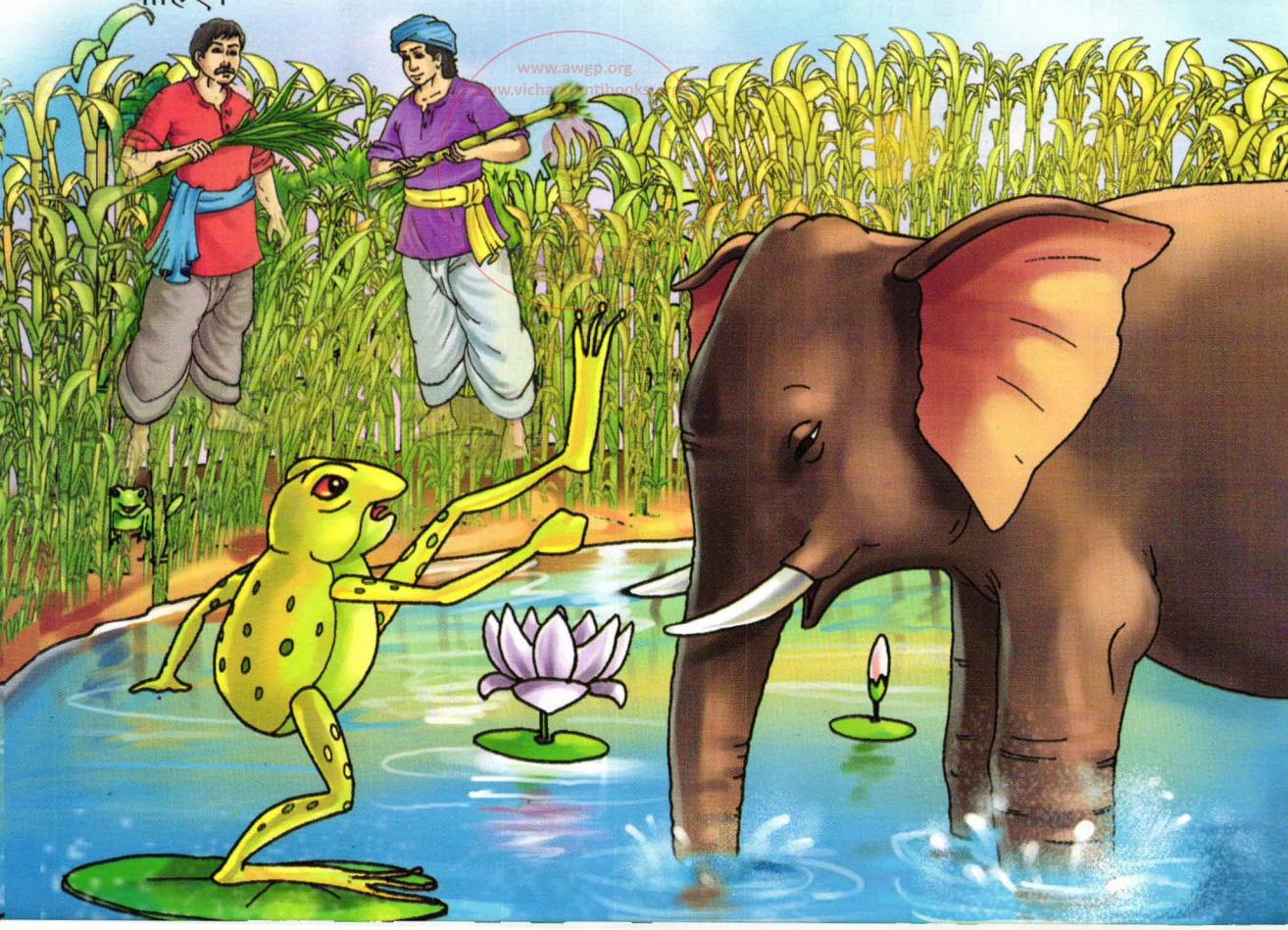

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लोमड़ी की चालाकी

एक खरगोश था। वह किसी किसान के खेत में घास खाने चला जाता था। खरगोश कभी भी खेत को नुकसान नहीं पहुँचाता था। किसान भी उसकी इस सज्जनता से परिचित था। सो रहने के लिए एक कोने में जगह दे दी। एक दिन एक लोमड़ी उधर से आई और खरगोश से पूछने लगी—"मक्की पक रही है, कहो तो पेट भर लूँ।"

खरगोश ने कहा—"खेत से पूछ लो। वह जैसा कहे, वैसा करना।"

लोमड़ी ने खेत से पूछा और फिर आवाज बदलकर खेत की ओर से कहा—"खा लो, खा लो।" इतने में किसान का पालतू कुत्ता आ गया। वह सब देख और सुन रहा था। उसने आते ही खेत से पूछा—"बताओ तो इस धूर्त लोमड़ी को मजा चखा दूँ।" फिर उसने स्वर बदलकर कहा—"धूर्त लोमड़ी की टाँग तोड़ दो।"

कुत्ते को झपटते देखकर लोमड़ी नौ दो ग्यारह हो गई। सच है, छल तो छल है। जब वह पकड़ में आता है तो उसका दंड भी मिलता है। अंत में सचाई समझ में आ ही जाती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बुढ़िया का त्याग

वर्जीनिया के एक सुनसान प्रदेश में रेल से जाने के लिए मार्ग बना हुआ था। एक बार रात्रि के समय पहाड़ से बरफीली चट्टानें टूट-टूटकर लाइन पर गिर पड़ीं। गाड़ी आने वाली थी। अँधेरी रात में गाड़ी के गिरने का खतरा था।

उस क्षेत्र में एक बुढ़िया रहती थी। उसे चिंता हुई कि गाड़ी कैसे रुके और दुर्घटना कैसे बचे ? बुढ़िया के पास एक चारपाई थी, वह उसी को तोड़कर रेलवे लाइन पर जलाने लगी और जलती लकड़ियाँ सिगनल की तरह हिलाती रही। गाड़ी आई। ड्राइवर ने देखा और गाड़ी रोक दी जिससे दुर्घटना होने से बच गई।

आज भी प्रतिवर्ष उस वृद्ध महिला की श्रद्धा से बरसी मनाई जाती है। अच्छे काम करने वाले अमर हो जाते हैं।

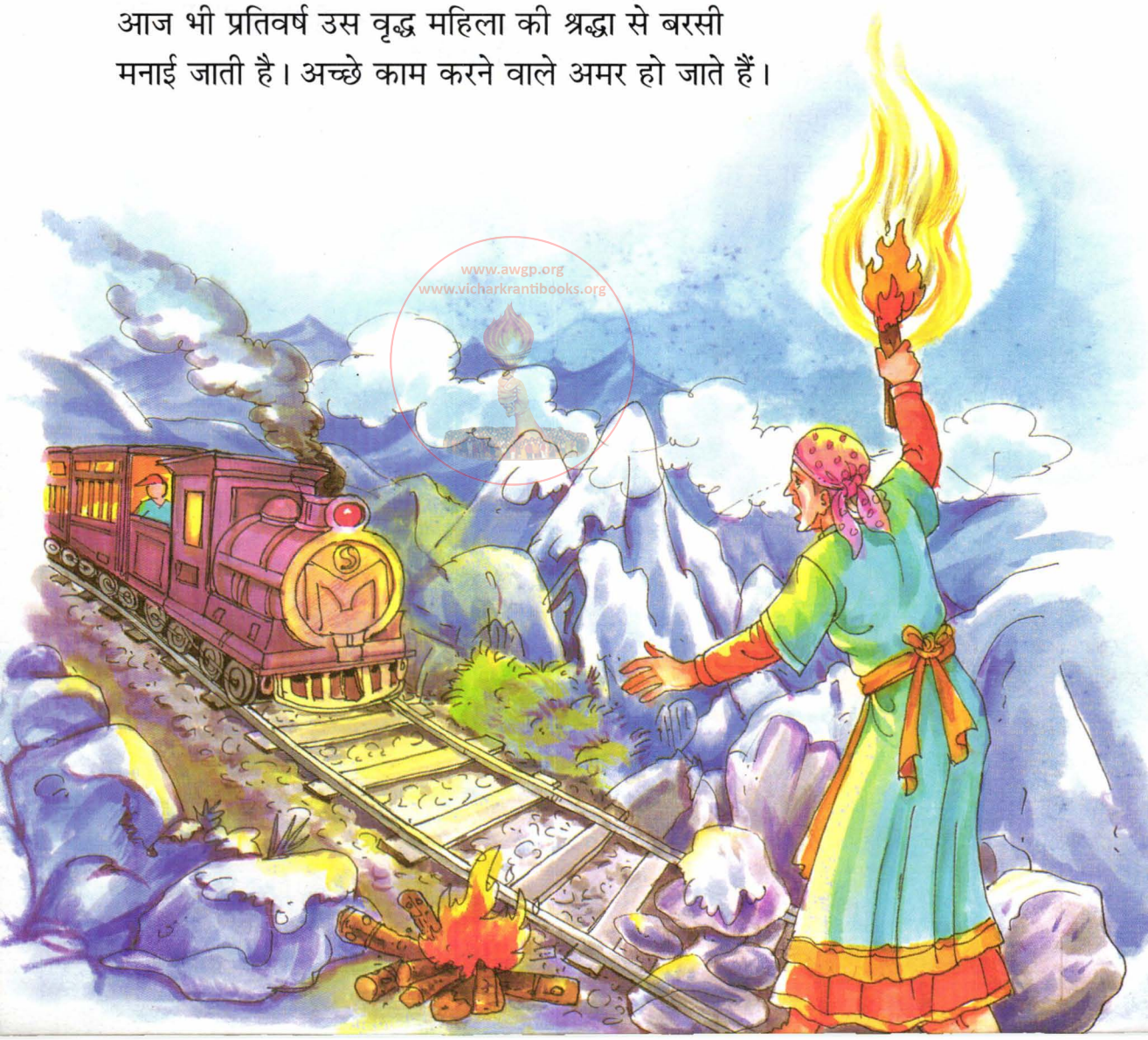

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर्त्तव्यनिष्ठा

फ्रांस के कारडीनस प्रकाश स्तंभ की लालटेन घुमाने वाले चौकीदार को भयंकर बीमारी हो गई। पत्नी सेवा में लगी थी। दो छोटे बच्चे थे। मौसम उस दिन खराब था। लालटेन न घुमाने पर उधर से निकलने वाले जहाज के टकरा जाने या डूब जाने का खतरा था। क्या किया जाए? अंत में दोनों बच्चों को तट पर लालटेन घुमाने की जिम्मेदारी सौंपी गई। पत्नी कभी पति के पास तो कभी बच्चों के पास चक्कर लगाती रही। उस भयंकर रात्रि में ही पति का देहांत हो गया। किंतु उस परिवार ने पूरी निष्ठा के साथ अपना कर्त्तव्य निभाया।

अपने सुख-दुःख की परवाह न कर, समाज और राष्ट्र के लिए अपना जीवन न्योछावर करने वाले व्यक्ति, इतिहास में अमर हो जाते हैं।

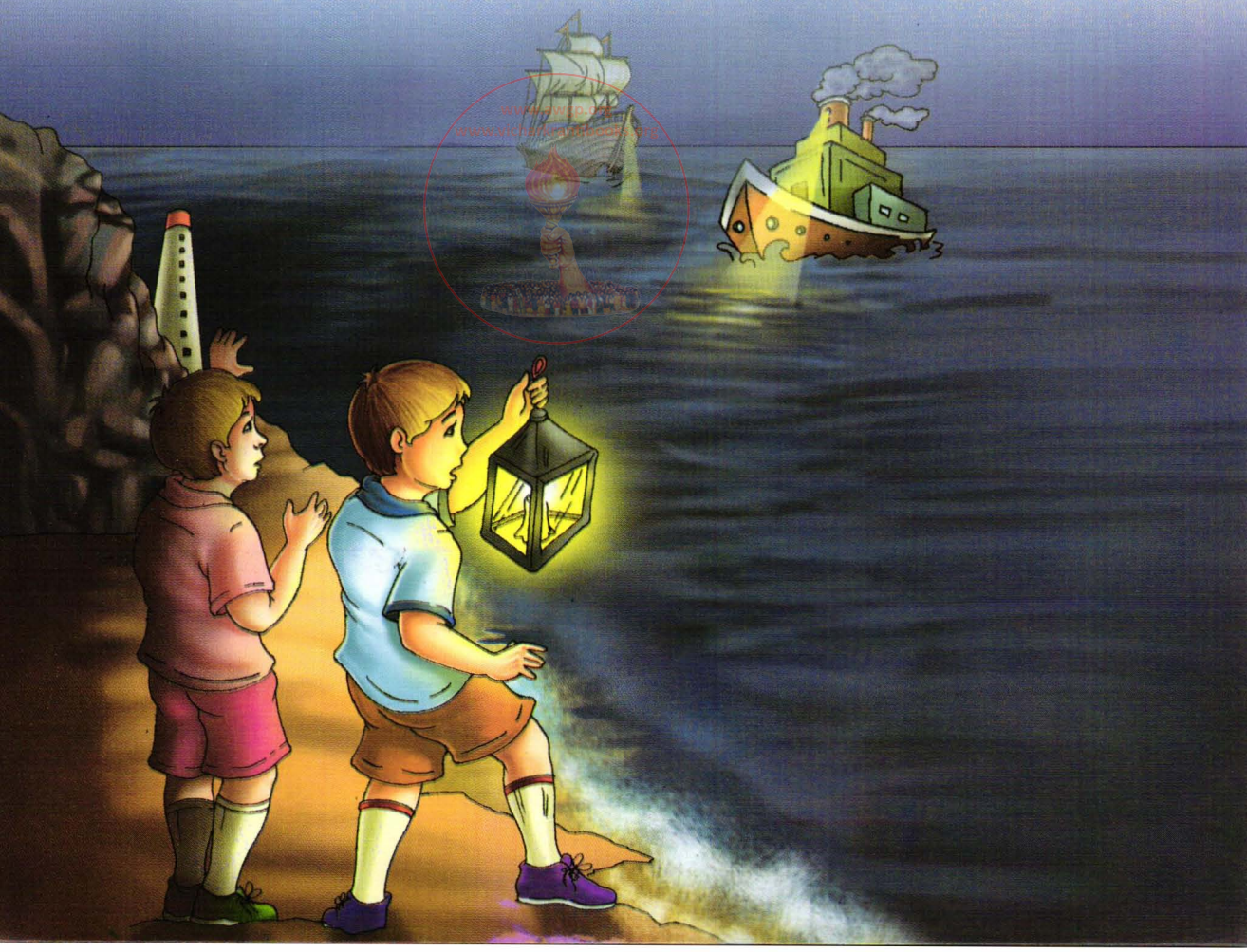

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूध के बदले पानी

प्रजा में घोषणा कराई गई कि किसी राजकाज के लिए हजार मन दूध की आवश्यकता पड़ेगी। सभी प्रजाजन रात्रि के समय खुले पार्क में रखे हुए कड़ाहों में अपने-अपने हिस्से का एक-एक लोटा दूध डाल जाएँ। रात्रि के समय पार्क में बड़े-बड़े कड़ाहे रख दिए गए। चौकीदारी का कोई प्रबंध नहीं किया गया। स्थिति का पता कानों-कान सभी को लग गया।

रात्रि का समय और चौकीदारी का न होना, इन दो कारणों का लाभ उठाकर प्रजाजनों ने दूध के स्थान पर पानी डालना आरंभ कर दिया। सबने सोचा कि इतने लोटे दूध होगा, तो हमारे एक लोटे पानी का किसी को पता भी न चलेगा। सभी ने एक ही तरह सोचा और अपने हिस्से के दूध के बदले पानी डाला।

दूसरे दिन मंत्री राजा को दूध के कड़ाह दिखाने ले गए। सभी पानी से भरे हुए थे। दूध का नाम तक न था। राजा ने उस दिन समझा कि समाजतंत्र में नीतिनिष्ठा को जीवित बनाए रखने के लिए सामाजिक अनुशासन की कितनी आवश्यकता है।

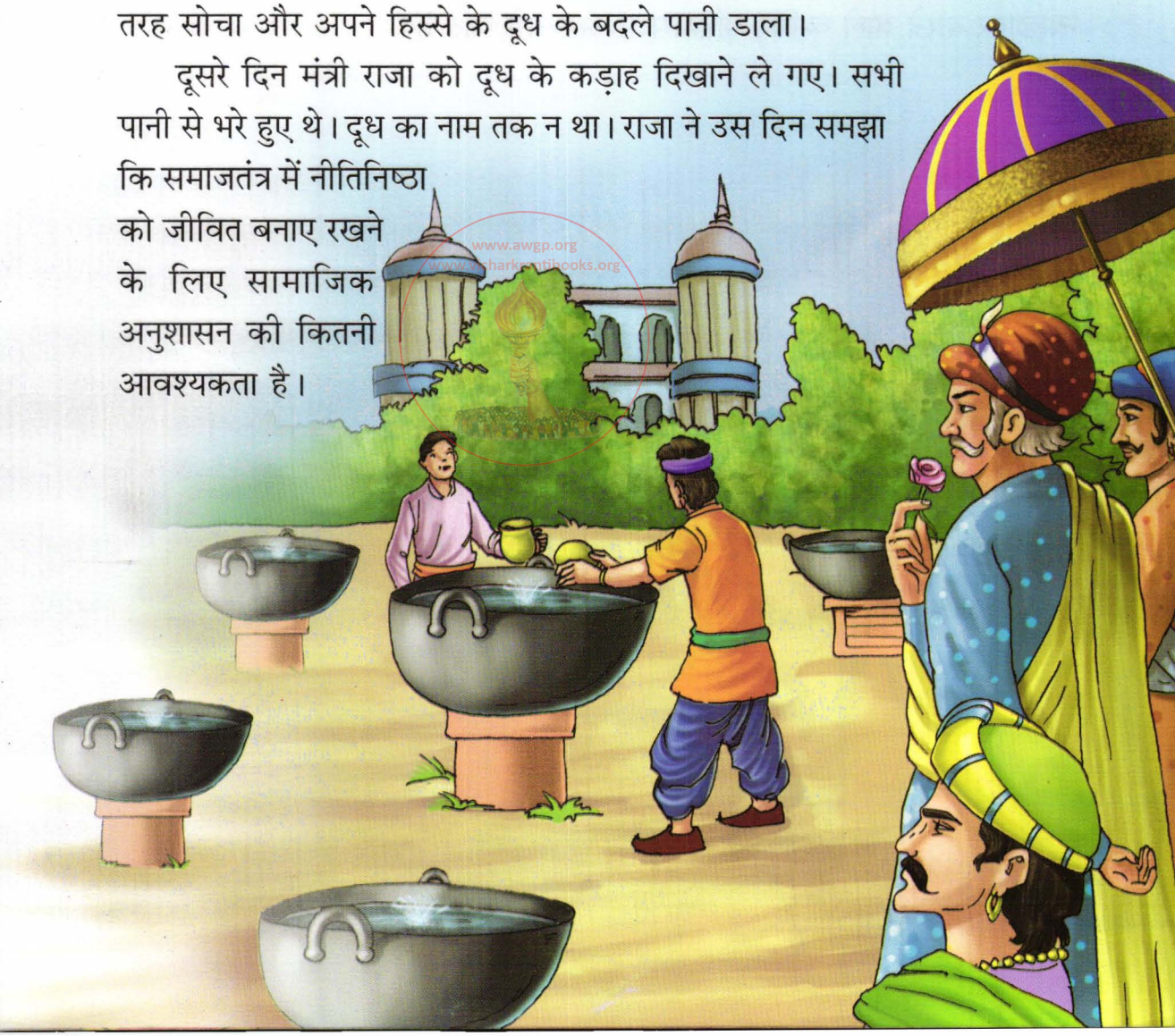

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मोमबत्ती-धूपबत्ती

कमरे के एक कोने में धूपबत्ती जल रही थी और दूसरे कोने में मोमबत्ती। मोमबत्ती ने तिरस्कारपूर्वक धूपबत्ती की ओर देखा और कहा—"देखती नहीं मैं कितनी भाग्यवान हूँ। चारों ओर मेरा प्रकाश फैल रहा है। सबकी आँखें मेरी ओर रहती हैं।"

धूपबत्ती ने कहा—"बहन सो ठीक है पर परीक्षा के कठिन समय में धैर्य और साहस के साथ अपनी जगह अड़ी रह सको तभी चमक की सार्थकता है।" मोमबत्ती ने बात अनसुनी कर दी। हवा का एक तेज झोंका आया। मोमबत्ती बुझ गई, पर धूपबत्ती ने अपनी सुगंध और भी तेजी से बखेरना शुरू कर दिया। छोटा और बड़ा कद रूप-रंग से नहीं होता, कार्य से होता है।

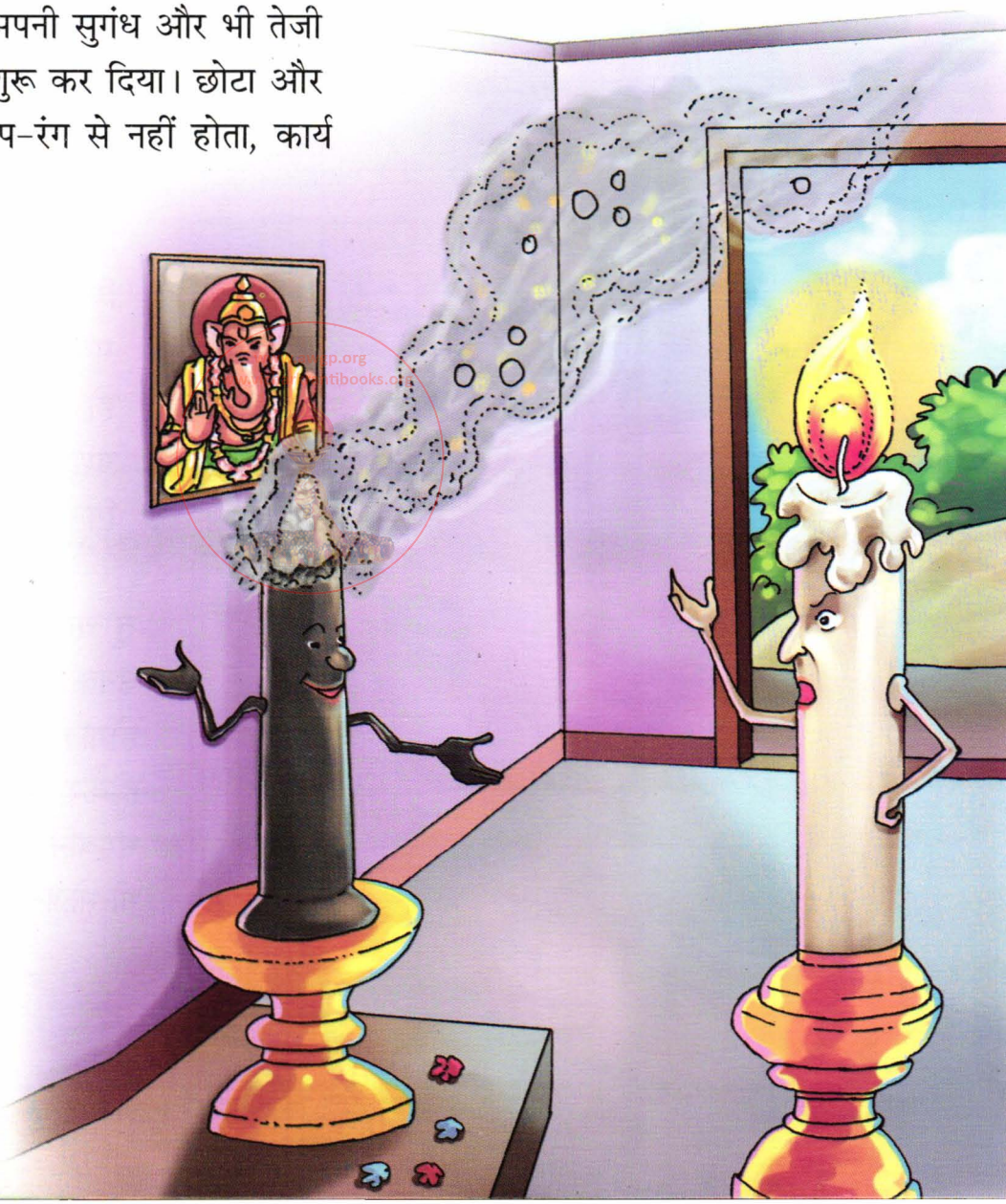

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राजा का अभिमान टूटा

एक राजा को यह अभिमान था—"मैं ही राजा हूँ और सब जगत का पालक हूँ, मनु आदि शास्त्रकारों ने व्यर्थ विष्णु भगवान को जगत का पालक कहकर शास्त्रों में लिख दिया है।" एक बार एक संन्यासी शहर के बाहर एक पेड़ के नीचे जा बैठा। लोग उसकी शांति से भरी मीठी-मीठी बातें सुनने के लिए वहाँ जाने लगे। एक दिन राजा भी वहाँ गया और कहने लगा—"मैं ही सब लोगों का पालक हूँ।" यह सुनकर संत ने पूछा—"तेरे राज्य में कितने कौए, कुत्ते और मकोड़े हैं?" राजा चुप हो गया। क्योंकि इतने पशु-पक्षियों को कैसे गिन सकता था?

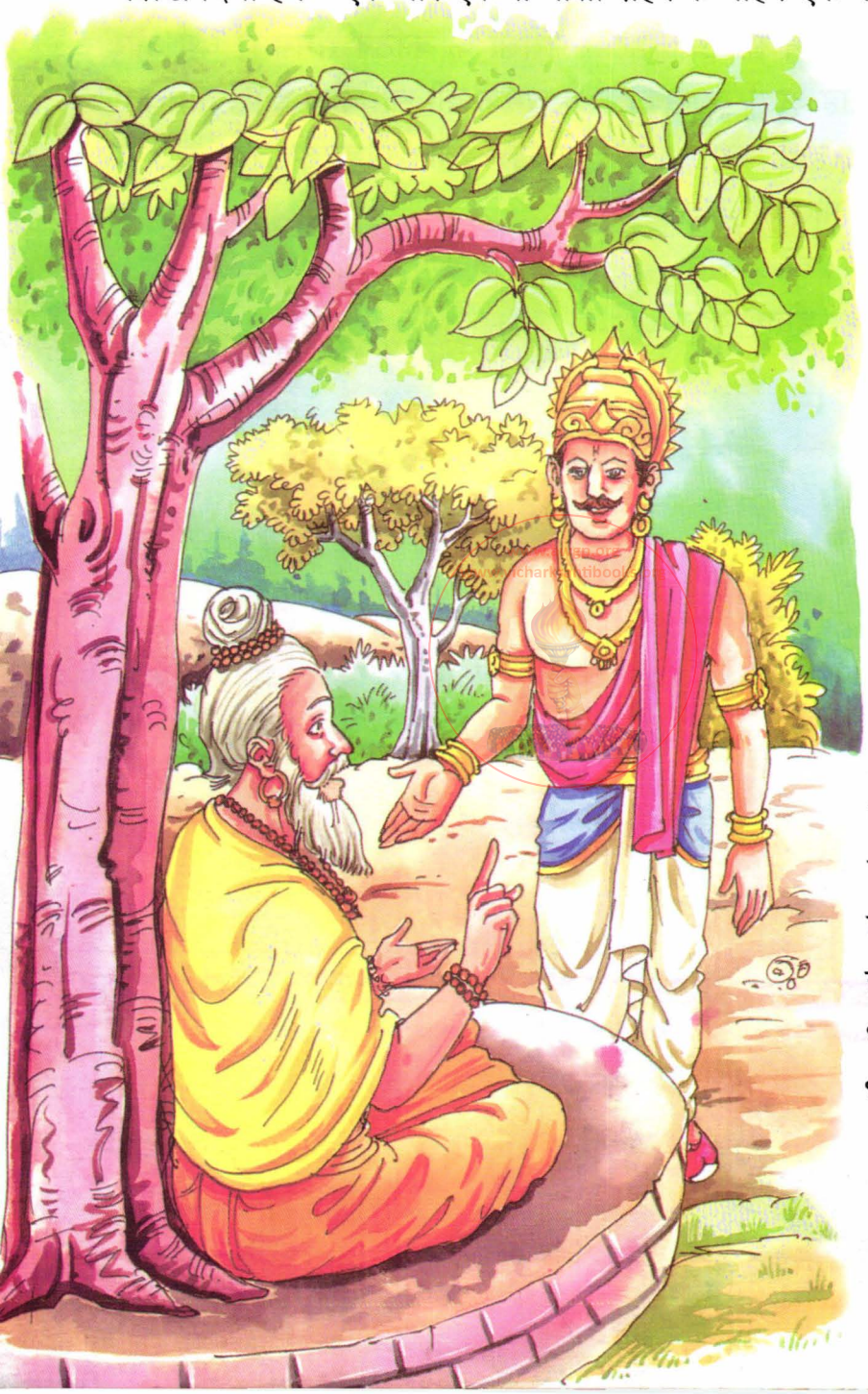

संत ने कहा—"जब तू यही नहीं जानता तो उनको भोजन कैसे भेजता होगा।" राजा ने लज्जित होकर कहा—"तो क्या भगवान कीड़े-मकोड़ों को भी भोजन देते हैं। यदि ऐसा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है तो मैं एक कीड़े को डिबिया में बंद करके देखता हूँ। कल देखूँगा भगवान इसे कैसे भोजन देते हैं ?'' दूसरे दिन राजा ने संत के पास जाकर डिबिया खोली तो वह कीड़ा चावल का टुकड़ा बड़े प्रेम से खा रहा था। हुआ यह कि एक चावल डिबिया बंद करते समय राजा के मस्तक में लगे तिलक से गिर पड़ा था। तब उस अभिमानी राजा ने माना कि भगवान ही सबका पालक है ?

बहुधा व्यक्ति अहंकार में यह भूल कर बैठते हैं कि वे भगवान के बनाए इस संसार के माली नहीं, मालिक हैं।

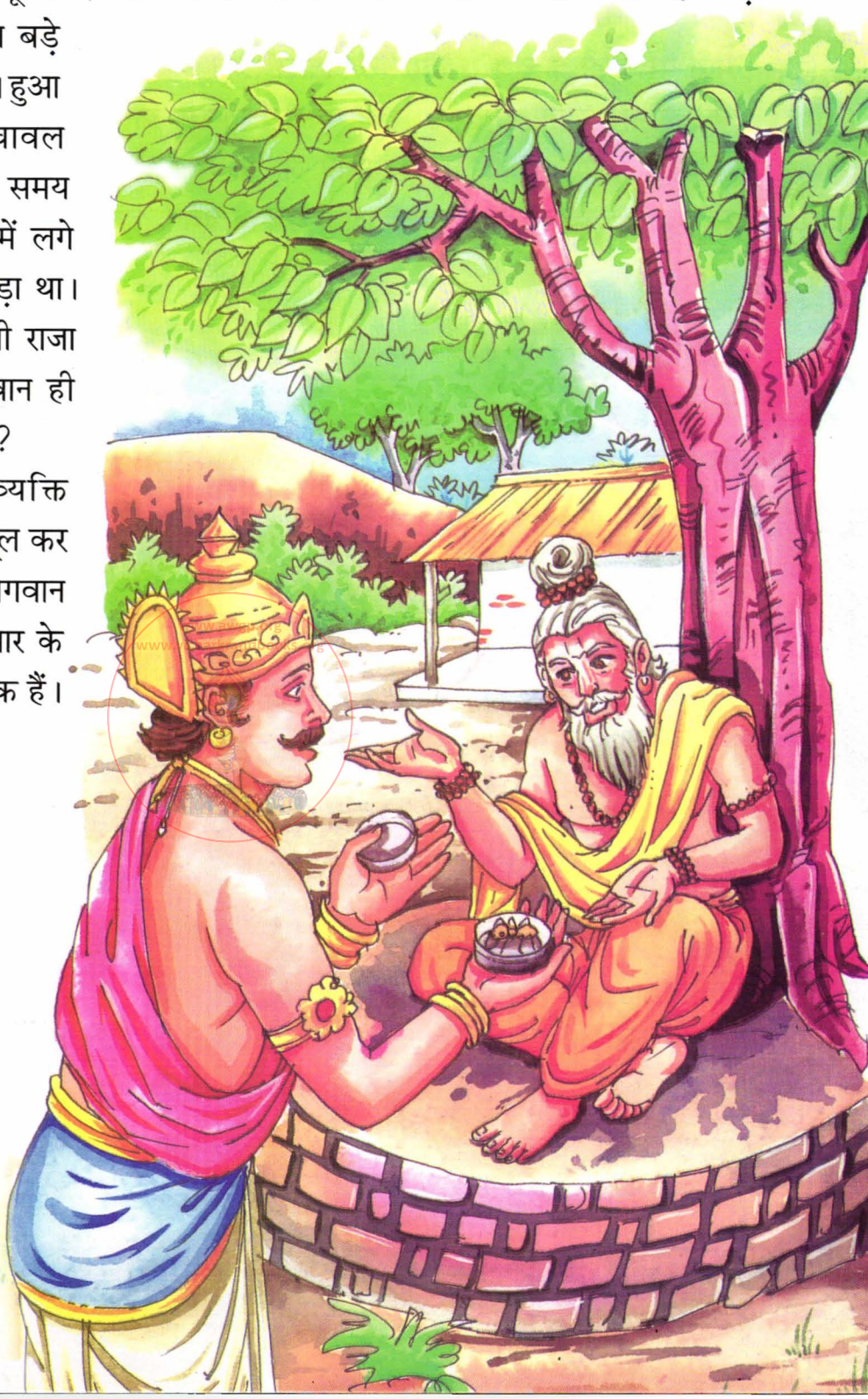

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हनुमान जी से सहायता

एक बार एक आदमी की गाड़ी कीचड़ में फँस गई। उसके बैलों ने बहुत जोर मारा पर गाड़ी कीचड़ से बाहर न निकल सकी। वह आदमी गाड़ी से उतरकर हनुमान जी का नाम जपने लगा। उधर से एक पंडित जी आ रहे थे। बोले भाई पहले पहिये में थोड़ा हाथ लगाओ, तभी हनुमान जी भी कुछ सहायता करेंगे। उसने गाड़ी वाले से कहा—"मेहनत करने वाले लोगों की ही देवता भी सहायता करते हैं।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

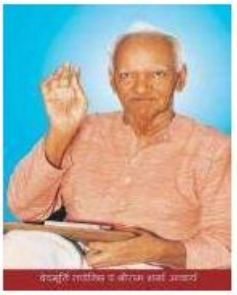

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org